मरु संदेश

Maru Sandesh

पंचम अंक – 2022

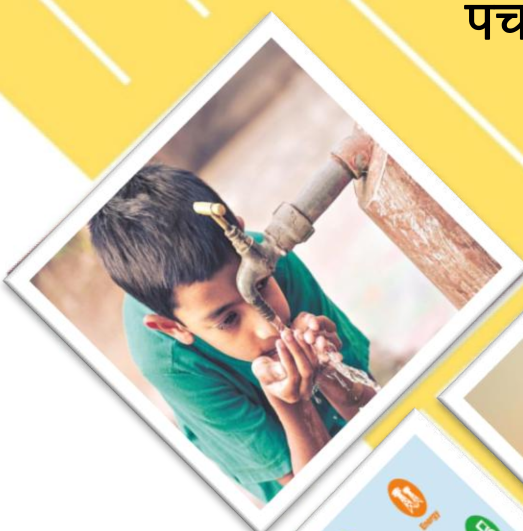

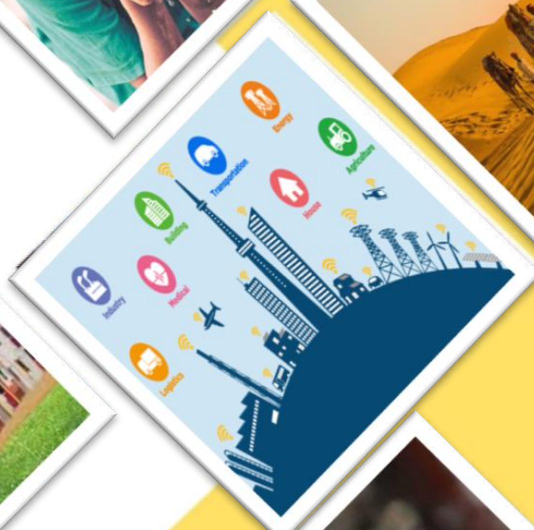

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

हडको वित्त पोषित CSR योजनाएं

संरक्षक एवं संपादक

श्री सुधीर कुमार भटनागर,
क्षेत्रीय प्रमुख

सह संपादक

श्रीमती अंजु गर्ग,
प्रबंधक (सचिवीय) /
हिन्दी नोडल अधिकारी

एवं

श्री शैलेन्द्र सिंघवी,
सहायक प्रबन्धक (वित्त) एवं
हिन्दी नोडल सहायक

विशेष सहयोग

डॉ. अरूण राणा, संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना)
डॉ. प्रकाश जैन, प्रबंधक (प्रशासन)
श्री आशीष कुमार, सहायक प्रबन्धक
एवं क्षेत्रीय कार्यालय के
सभी कार्मिक

बधाई हो

लिपी भटनागर पुत्री श्री सुधीर कुमार भटनागर ने राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के MBBS (द्वितीय वर्ष) में 65 प्रतिशत अंक प्राप्त किये और कोविड महामारी के दौरान चिकित्सा महाविद्यालय में उच्च स्तर पर कार्य किया।

अनुष्का सिंह पुत्री डा0 अरूण राणा ने 12 वीं कक्षा में 97 प्रतिशत अंक प्राप्त किये और अब रूरल मेडिकल कॉलेज लोनी, महाराष्ट्र से MBBS कर रही है।

पुलह भटनागर, पुत्र श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख Master of Science (Renewal Energy) Programme के अन्तर्गत ECOLE Polytechnique's Master of Science & Technology, Paris, France के द्वितीय वर्ष में प्रवेश प्राप्त किया।

अभय सिंह राणा पुत्र डा0 अरूण राणा ने वैल्लोर इंस्टि्टयूट ऑफ टैक्नोलोजी (VIT) भोपाल से कम्प्यूटर साइन्स से **B.Tech** (प्रथम वर्ष) में प्रथम श्रेणी प्राप्त की।

डॉ0 अम्बिक जैन पुत्र डॉ0 प्रकाश जैन, प्रबंधक–प्रशासन ने श्री बी एम पाटील मेडीकल कॉलेज (बीएलडीई), बीजापुर, कर्नाटक से इस वर्ष एम बी बी एस की डिग्री पूर्ण की।

रितिका लावडिया, पुत्री श्री राजकुमार लावडिया, प्रबंधक–प्रशासन ने राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लि0, में कनिष्ठ लेखाकार के पद पर दिनांक 11/04/2022 को झालावाड में नियुक्ति प्राप्त की।

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का सतत् निर्वाह करते हुए कार्यालय की गृह पत्रिका **"मरू सन्देश"** के पंचम अंक का प्रकाशन ई–पत्रिका के रूप में कर रहा है। हिंदी के उत्तरोत्तर विकास की दिशा में जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का यह प्रयास सराहनीय है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के संवैधानिक दायित्व के निर्वाह की पूर्ति के साथ – साथ हिंदी भाषा के प्रचार – प्रसार में भी सहयोगी सिद्ध होगा। पत्रिका के ज्ञानवर्धक लेख, हडको की कार्यप्रणाली, तकनीकी जानकारी आदि का समावेश पत्रिका के पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। पत्रिका के पंचम अंक के सफल प्रकाशन के लिए जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

कामरान रिज़वी (आईएएस)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **"मरू सन्देश"** के पांचवें अंक का प्रकाशन करते हुए अपने राजभाषा दायित्व को निभा रहा है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। हिंदी ऐसी भाषा है, जो प्रत्येक भारतीय को वैश्विक स्तर पर सम्मान भी दिलाती है। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है।

ई–पत्रिका के रूप में **"मरू सन्देश"** के पंचम अंक का प्रकाशन जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का सराहनीय प्रयास है। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका के इस अंक में क्षेत्रीय कार्यालय की योजनाओं एवं परियोजनाओं सम्बन्धी तथ्यपरक जानकारियों के साथ–साथ रोचक विषयों की सामग्री भी पत्रिका की सार्थकता में योगदान देगी। इस प्रयास के लिए संपूर्ण जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय एवं संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय हडको के कारोबार के साथ–साथ राजभाषा के विकास के लिए भी पूर्ण सजगता के साथ कार्य कर रहा है एवं इसी क्रम में अपनी ई–पत्रिका **"मरू संदेश"** का पंचम अंक नवीन साज सज्जा के साथ प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे खुशी है कि इस पत्रिका की पठन सामग्री का चयन हर वर्ग के लिए किया गया है। यह सराहनीय प्रयास है।

मैं क्षेत्रीय कार्यालय के इस प्रयास की सराहना करता हूँ, तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजभाषा के विकास के लिए सच्ची भावना से ओत–प्रोत अपने दायित्व का निर्वाह करता रहेगा। मैं इस शुभ अवसर पर जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

संदेश

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अपनी गृह ई–पत्रिका **"मरू सन्देश"** के पंचम अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। इस पत्रिका का कलेवर हर वर्ग के लिए उपयोगी है। इस अंक में जहाँ एक और हडको की कार्य प्रणाली और तकनीकी जानकारी का समावेश है, वहीं दूसरी ओर विभिन्न विधाओं पर विचारात्मक लेख, प्रेरक कहानियाँ, कविताएँ तथा क्षेत्रीय कार्यालय की विविध गतिविधियाँ भी परिलक्षित होती हैं।

मैं इस शुभ अवसर पर जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को मरू सन्देश पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह सफर भविष्य में भी इसी प्रकार चलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

अजय मिश्रा
मुख्य सतर्कता अधिकारी

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है, कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की गृह ई–पत्रिका **"मरु संदेश"** का पंचम अंक नए कलेवर के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका निश्चित रूप से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी के प्रति अधिक निष्ठावान बनाएगी और उन्हें अपनी अभिरूचि दर्शाने का एक अवसर प्रदान करेगी।

मैं इस शुभ अवसर पर जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के संपादक मंडल की ओर से किये गए श्रम साध्य प्रयासों की सराहना करती हूँ और इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए बधाई देती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि कार्यालय भविष्य में भी इस क्रम को जारी रखेगा।

शुभकामनाओं सहित।

उपिन्दर कौर
महा प्रबंधक (राजभाषा)

संदेश

सुधिजन पाठकों के समक्ष जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की **"मरु संदेश"** के पंचम अंक को सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हिंदी केवल सहज, सरल और उदार भाषा ही नहीं बल्कि हमारे भावों की नैसर्गिक वाहिनी भी है। इसमे अपनापन है, अपनी माटी की सौंधी खुशबू है। साथ ही यह एक सशक्त, वैज्ञानिक भाषा भी है जिसे समझने, बोलने और चाहने वाले पूरी दुनिया में बहुतायत में मौजूद हैं। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी का सहयोग पाकर इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी विस्तार हुआ है।

हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में पूर्ण प्रतिष्ठा दिलाना हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है। सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए हिन्दी को राजकाज की भाषा बनाना हमारा दायित्व है। इस क्रम में राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार–प्रसार में पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन उल्लेखनीय भूमिका निभाता है। पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण बनता है और हमारी क्षमताओं का विकास होता है। मुझे विश्वास है कि ई–पत्रिका मरु सन्देश राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में आशानुरूप भूमिका निभाएगी और पाठकों के मन को प्रफ्फुलित करेगी। आपके सुझाव बहुमूल्य हैं तथा वे हमें बेहतरी की प्रेरणा देते हैं।

सुधीर कुमार भटनागर
क्षेत्रीय प्रमुख

"राजस्थान राज्य – हडको का योगदान"

कवि जयशंकर प्रसाद इन पंक्तियों में विकास के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस तथ्य को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं कि विकास एक सतत् क्रम है, एक निरंतर प्रकिया जिसका कोई विराम नहीं है।

"इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रान्त भवन में टिक जाना,
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं हो।"

इस विकास क्रम का उद्‌गम सदियों पहले हुआ था परन्तु इसकी गति में प्रभावी विकास के घोतक साधनों का उचित प्रयोग नहीं था। आजादी पाने के साथ–साथ देश व सभी प्रांतों में एक नव–चेतना का आगाज हुआ और शनैः–शनैः सभी प्रांत प्रगति पथ पर अग्रसर होने लगे। फलतः हमारे राष्ट्र का विकास बढ़ता गया और आशा की किरण आने लगी कि हम शीघ्र ही विकसित देशों में अपना स्थान बना लेंगे। इस विश्वास को और सुदृढ़ करने के लिए पिछले पाँच दशकों में प्रगति अत्यंत तेजी से बढ़ी है। यदि हमारे सभी राज्य इस गति से विकास पथ की ओर उन्मुख रहे तो विकसित राष्ट्र के रूप में भारत शीघ्र ही अंकित हो जाएगा। संकल्प है तो मात्र यही कि प्रगति का यह क्रम बिना किसी अवरोध के निरंतर चलता रहे। राष्ट्र के इस संकल्प के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक प्रांत इस कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान करे और यह सहयोग हमारे राज्य की ओर से सदैव रहा है व रहेगा।

राजस्थान राज्य का गौरवशाली इतिहासः–

भारत के सर्वाधिक सुंदर राज्यों में राजस्थान का नाम भी आता हैं। सभी राज्यों में क्षेत्रफल की दृष्टि से यह सबसे बड़ा राज्य है यह देश के पश्चिम में पाकिस्तान से सटा राज्य है। राजस्थान की राजधानी जयपुर है यह राज्य अपने शाही इतिहास, शानो शौकत तथा किले व महलों के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता तथा इतिहास की धरोहर देखने लायक है। राजस्थान भारत का एक महत्वपूर्ण प्रांत है यह 30 मार्च 1949 को भारत का ऐसा प्रांत बना जिसमें तत्कालीन राजपूताना की ताकत बने भरतपुर के चार शासकों ने भी अपनी रियासतों का विलय राजस्थान में किया था। 18 मार्च 1948 को शुरू हुई इस राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया कुल 7 चरणों में 1 नवंबर 1956 को पूरी हुई। 3,42,269 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला यह देश का सबसे बड़ा राज्य हैं। देश की कुल क्षेत्रफल के लगभग 11 प्रतिशत भाग में बसा हैं। पश्चिम में पाकिस्तान से राजस्थान की 1070 किलोमीटर स्थलीय सीमा लगती हैं राज्य के उत्तर पूर्व में पंजाब, हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश की सीमा लगती

हैं. तथा दक्षिण व पूर्व दक्षिण में इसकी सीमाएं गुजरात व मध्यप्रदेश के साथ मिलती हैं। दो राज्यों के बीच सर्वाधिक लम्बी सीमा मध्यप्रदेश के साथ है जहाँ दोनों राज्यों के 10–10 सीमावर्ती जिले हैं।

हर वर्ष बड़ी तादाद में देशी विदेशी पर्यटक राजस्थान की सैर करने आते हैं। स्वतन्त्रता से पूर्व यह राज्य कई देशी रियासतों एवं ठिकानों में विभाजित था। संयुक्त रूप से इसे राजपूताना कहा जाता था। जिसका अर्थ होता है राजा महाराजाओं की भूमि। पर्यटकों के लिए राजस्थान के कई स्थल विशेष आकर्षण का केंद्र होते हैं। विदेशी आगन्तुक जो भारत भ्रमण के लिए आते हैं अधिकतर लोग राजस्थान को जरुर देखने आते हैं।

राजस्थान राज्य में विकास की वस्तुस्थिति : –

1. **आधारभूत ढाँचे का विकासः–** सड़क–वर्ष 2021–22 में 1117 किमी. सड़कों का नवीनीकरण केन्द्रीय सड़क निधि से राज्य में 1075 कि.मी. सड़कों का सुदृढ़ीकरण एक पुल व 22 छोटी पुलियाओं का निर्माण राज्य कृषि विपणन बोर्ड द्वारा संपर्क सड़कों के निर्माण पर 268.13 करोड़ रुपये व्यय कर 3759 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया गया। बी. ओ. टी. पर आधारित योजना के तहत 78.24 करोड़ रुपये की 8 परियोजनाएँ पूर्ण कर यातायात के लिए खोली गईं। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत एक हजार से अधिक आबादी के सभी गाँवों को वर्ष 2021–2022 व 500 से 1000 की आबादी वाले गाँवों को वर्ष 2022–23 तक पक्की सड़कों से जोड़ा जाएगा।

2. **ऊर्जा क्षेत्र सुधारः–** विद्युत उत्पादन वृद्वि के लिए सतत् प्रयास किए गए हैं। पिछले पाँच वर्षों की तुलना में विद्युत उत्पादन में पाँच वर्षों में दुगुना विकास कार्य हुआ है जो कि 1302 मेगावाट से 2572 मेगावट हुआ है। सूरतगढ़ तापीय विद्युत परियोजना की प्रति वर्ष 250 मेगावाट की एक–एक इकाई से उत्पादन प्राप्त करने का कार्य निश्चित किया गया। दो सौ मेगावाट की प्रथम इकाई पूर्ण हुई। द्वितीय इकाई छः माह पूर्व ही समाप्त हो गई व 80 करोड़ रुपये की बचत, तीसरी इकाई का कार्य पाँच माह पूर्व ही पूर्ण हुआ व 80 करोड़ रुपये की बचत, चौथी इकाई छः माह पूर्व ही पूर्ण हुई व पुनः 80 करोड़ रु. की बचत, पाँचवी इकाई 29 माह में पूर्ण हुई व 100 करोड़ रु. की बचत दर्ज की गई। इसके बाद इसे राज्य का प्रथम सुपर थर्मल पावरस्टेशन बनाया गया। कोटा थर्मल को देश के इतिहास में सबसे कम समय में पूर्ण होने वाली परियोजना के रुप में देखा गया। उसकी 195 मेगावाट की छठी इकाई का निर्माण 24 माह में कर कीर्तिमान स्थापित किया गया।

3. **जल संसाधन विकासः–** सरकार की नवीन निर्देशिका के अनुसार 84 योग्य पंचायत समितियों में 320 नए जलग्रहण क्षेत्रों में कार्य प्रारंभ, 2022–23 में शेष पंचायत समितियों में 800 नवीन जल ग्रहण क्षेत्रों के चयन की कार्यवाही की गई। राजस्थान जल क्षेत्र पुनः संरचना परियोजना के अन्तर्गत 612 जल प्रबन्धन समितियों का गठन हुआ। 91 नहरप्रणाली एवं 16 बाँधों को जीर्णोद्धार व 6.14 लाख हैक्येटर कृषि सिंचाई को लाभ। परम्परागत जल स्त्रोतों के 3388 सुधार कार्य पूर्ण किए गए जिन पर 45.70 करोड़ रुपये व्यय हुए। वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर के 4863 कार्यों में से 16327 कार्य पूर्ण हुए जिनकी लागत 380 करोड़ रुपये आई। जारकम, सिदव्मुख, सोम–कमला–अंबा, जयसंमद व गंभीरी की आधुनिकीकरण परियोजना पूर्ण कर 19960 हैक्येटर क्षेत्र में अतिरिक्त सिंचाई क्षमता का सर्जन किया गया।

4. **स्वास्थ्यः–**23.47 लाख परिवार चिन्हित व 23 लाख से अधिक मेडीकेयर रिलीफ कार्ड वितरित व 111 लाख रुपये की निःशुल्क चिकित्सा। 46865 कुष्ठ रोगियों का उपचार, 40814 क्षय रोगियों की पहचान व 19,000 क्षय रोगियों का उपचार, मलेरिया के लिए 20284 निःशुल्क औषधि वितरण केन्द्र 1206 ज्वर उपचार केन्द्र, 1425 मलेरिया क्लिनिक, 197 भ्रमणशील दल कार्यरत। पोलियो के लिए 7 करोड़ रुपये का प्रावधान कर 25,000 ऑपरेशन। 43 सरकारी व 10 निजी रक्त बैंक में एच. आई. वी. मुफ्त रक्त उपलब्ध। 47851 विद्यालयों में 45 लाख विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण सम्पन्न। एड्स नियंत्रण कार्यक्रम हेतु विश्व बैंक की सहायता से 86 करोड़ रुपये की योजना स्वीकृत। ग्रामीण क्षेत्रों में 276 एवं शहरी क्षेत्रों में 9 उपस्वास्थ्य केन्द्र खोले गए। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर 286 शय्याएँ बढ़ाई गई, 13 एक्सरे मशीनें, 100 कैलोरीमीटर, 1 सेटेलाइट अस्पताल व तीन 300 एम. ए. की एक्सरे मशीने सुलभ कराई गई। वर्ष 2022–23 में राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने का प्रावधान किया गया है।

5. **पंचायतीराजः–** पंचायती राज को अधिक वित्तीय व प्रशासनिक शक्तियां प्रदान कर सुदृढ़ बनाया गया। संविधान की ग्याहरवीं अनूसूची के 29 विषयों में से 16 विषयों के कार्य पंचायतों को हस्तान्तरित किए गए। प्रारम्भिक शिक्षा का संपूर्ण काम पंचायती राज को दिया गया। पंचायती संस्थाओं के चुनाव में अजा/जजा के 15 प्रतिशत आरक्षण को बढ़ाकर 21 प्रतिशत किया गया। ग्रामीण विकास के लिए वार्ड ग्राम सभाओं का गठन किया गया।

6. **पर्यटनः–** पर्यटन को राज्य में जन उद्योग के रुप में स्थापित एवं विकसित किए जाने हेतु पर्यटन नीति घोषित। पर्यटन हेतु कुल

147.5 करोड़ रुपये व्यय करने की स्वीकृति दी गई। पर्यटन स्थलों व प्राचीन इमारतों के विकास एवं संरक्षण की मह त्वपूर्ण योजना के तहत 38 विस्तार एवं विकास करवाए गए जिन पर 380.93 लाख रुपया खर्च किया गया। भरतपुर के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को श्रेष्ठ प्रबन्धित पर्यटन स्थल का राष्ट्रीय पुरस्कार। पैलेस ऑन व्हील्स विश्व की श्रेष्ठ पर्यटन रेलों में चयनित।

हडको का राजस्थान के विकास में योगदान : –

हडको, भारत सरकार का एक उपक्रम होने के उपलक्ष्य में राजस्थान राज्य के चहुँमुखी विकास के लिये एक अग्रिम वित्तीय संस्था है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय राजस्थान में विगत 50 वर्षो से अधिक समय से कार्यरत है। अभी तक हडको ने विभिन्न क्षेत्रों में कुल रूपये 18265.41 करोड स्वीकृत किये हैं और साथ ही कुल रूपये 16196.39 करोड की राशि अवमुक्त की है। जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय ने अभी तक कुल 1223 परियोजनाएं स्वीकृत की हैं, जिनमें से 906 योजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। हडको द्वारा 147 शहरों की 253 संस्थाओं को जिनकी परियोजना लागत रूपये 39017.63 करोड है, जिसमें से राशि 18265.41 करोड का ऋण स्वीकृत किया गया है। उपरोक्त स्वीकृत राशि में से रूपये 16196.39 करोड अवमुक्त किये जा चुके हैं। अभी तक राजस्थान राज्य के लिए हडको द्वारा 968200 घरों के लिए ऋण प्रदान किया जा चुका है और साथ ही 70943 प्लॉट और 417361 शौचालयों को बनवाने हेतु भी ऋण की अवमुक्ति की गई है। हडको, भारत सरकार की विभिन्न परियोजनाओं में भी मंत्रालय की तरफ से प्रतिभागिता करता है। इनमें कुछ योजनायें जैसे PMAY, AMRUT, SMARTY CITY एवं Jal Jeeven Mission इत्यादि हैं।

वित्तीय वर्ष 2021-22 में हडको द्वारा राजस्थान राज्य के विकास के लिये कुल रूपये 4760.00 करोड स्वीकृत किये गये, जिसमें से कुल रूपये 4155.00 करोड जारी किये गये। हडको क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अभी तक का सर्वोच्च राशि स्वीकृत और अवमुक्त की गई है। जिसमें मूल रूप से माननीय प्रधानमंत्री की स्वप्निल जल जीवन मिशन योजना पर राज्य सरकार के मद में रूपये 4000 करोड की अवमुक्ति की गई। इसके साथ शहरी अधोसंरचना के विकास हेतु नगरपालिका /नगर परिषद /जिला स्तर पर सडकों, ड्रेनेज, सीवरेज तथा उनके परिशोधन संयत्रों (Treatment Plant) की योजना तथा कमजोर/ निम्न आय वर्ग के आवास योजना पर भी स्वीकृति जारी की गई। हडको द्वारा गत वित्तीय वर्ष में 5 परियोजनाएं स्वीकृत की गई है जिनकी कुल परियोजना लागत रूपये 17416.00 करोड है। वित्तीय वर्ष 2021–22 में हडको द्वारा किये गये कार्यो की वस्तुस्थिति निम्न प्रकार है:–

वित्तीय वर्ष 2021–2022

क्रं सं0	विवरण	संख्या
1	कुल स्वीकृत योजनाएं	5
2	परियोजना लागत	17416.74
3	कुल स्वीकृत ऋण (करोड में)	4760.00
4	ग्रामीण प्रंबधन	160.00
5	शहरी प्रंबधन	600.00
6	कुल अवमुक्त ऋण (करोड में)	4155.00
7	शहरी संरचना	4155.00
8	कुल आवासीय इकाई	16476
9	अल्प आय वर्ग	10796
10	निम्न आय वर्ग	5680

भविष्य में राजस्थान राज्य के विकास में हडको का योगदानः –

गत वर्ष की भांति, इस वित्तीय वर्ष 2022-23 में भी हडको राज्य सरकार के विकास मे कदम से कदम मिला कर चलने के लिये तत्पर है। इसके अन्तर्गत कुछ मुख्य परियोजनाएँ निम्न हो सकती हैं। ये सभी योजनायें राजस्थान सरकार की कुछ महत्तवपूर्ण योजनाओं में से है।

क्रं.सं0	योजना का नाम	राशि (करोड में)
1	राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम (सौर ऊर्जा संयत्र)	2438
2	राजस्थान में विभिन्न स्थानों पर मेडिकल कॉलेज का निर्माण	800
3	पीने के पानी हेतु पेयजल आपूर्ति (नदियों को जोडकर) परियोजना के अन्तर्गत	1500
4	मुख्यमंत्री उद्घोषणाओं और इस वित्तीय वर्ष में जारी राज्य सरकार के बजट के अन्तर्गत विभिन्न नगर पालिकाओं / परिषदों / निगमों को मूलभूत सुविधाएं प्रदान करने हेतु ऋण	500
	कुल योग	**5238**

इस वित्तीय वर्ष भी विभिन्न परियोजाओं में हडको द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जायेगी। इस वित्तीय वर्ष में लगभग रूपये 5238 करोड के ऋण स्वीकृत करने की सम्भावना है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय इस दिशा में पूर्णरूप से प्रयासरत है। इन सभी प्रतिकूल धाराओं को सहजता से लेते हुए हमने एक सुदृढ़ राज्य के निर्माण में अपना एक अमिट सहयोग प्रदान किया है। इसी विजय पताका के क्रम को निरन्तर बढ़ाते हुए हम इस राज्य के सर्वांगीण विकास को ओर सुदृढ़ बनाते हुए अधिक से अधिक कार्य क्षेत्रों में अपना परचम स्थापित करते हुए 'सुनहरे राजस्थान की सुनहरी रेत' को विश्व पन्नों पर अंकित करना हमारा उद्देश्य ही नहीं, अपितु हमारा कर्तव्य है। आशा है, इस कर्तव्य को हम सभी पूर्ण परिश्रम से संचित कर एक नई सुबह का आगाज करेंगे।

जय हिन्द! जय राजस्थान

सुधीर कुमार भटनागर
क्षेत्रीय प्रमुख

"जल जीवन मिशन"

जल सभी जीवित प्राणियों के लिए पृथ्वी पर अनमोल पदार्थ है। कोई भी बिना पानी के जीने की सोच भी नहीं सकता। वर्तमान समय में हर जगह लोग जल संसाधनो की कमी, भूजल स्तर में कमी, दुनिया के कई हिस्सों में सूखे और वर्षा जल संचयन आदि के बारे में बात कर रहे है। जल संसाधनों की कमी अब दुनिया के लिए एक वैश्विक समस्या बन गई

है। यह तब हो रहा है जब पृथ्वी लगभग 71 प्रतिशत पानी से ढकी हुई है। वास्तव में उपयोगी पानी केवल 3.5 प्रतिशत उपलब्ध है जो भूजल, ग्लेशियर, नदियों और झीलों आदि के रूप में उपलब्ध है। पानी के ये प्राकृतिक संसाधन खपत में वृद्वि के कारण बहुत तेजी से घट रहे है क्योंकि बढती जनसंख्या पानी की बर्बादी, तेजी से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण को बढाती है। भारत और अन्य देशों के कुछ हिस्सों को पानी की भारी कमी का सामना करना पड रहा है और दुर्भाग्य से सरकार को उन जगहों के लिए सडक टैंकर या ट्रेन से पानी की व्यवस्था करनी पड रही है। भारत में 1951 से 2011 की समयावधि के बीच प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 70 प्रतिशत तक कम हो गई है और 2050 तक 22 प्रतिशत घटने की उम्मीद है। डेटा के अनुसार वैश्विक आबादी का लगभग एक तिहाई 2 अरब लोग एक साल में एक महीने के लिए पानी की कमी की स्थिति में रह रहे है, हम यह भी कह सकते है कि पूरी दुनिया में आधे अरब लोग पूरे साल पानी के संकट का सामना करते है।

जल जीवन मिशन के तहत भारत सरकार द्वारा एक संकल्प लिया गया है, कि सभी के घरों में शुद्व व स्वच्छ जल को पहुॅचाया जाएगा। आज के समय में हमारे देश में बहुत से गाँव ऐसे है, जहाँ जल की समस्या आज भी बहुत बडी है। कई इलाकों में तो लोगो को पानी लेने के लिए प्रतिदिन 1 या 2 किलोमीटर दूर तक चल कर जाना पडता है ताकि उनके पीने का शुद्व पानी प्राप्त हो सके। जरा सोच कर देखिए कि यदि आपको प्रतिदिन यदि इतनी दूर पानी के लिए जाना पडे, तो कैसे आप इसके अपने काम के साथ सामन्जस्य बैठा पाएंगे। आपका आधा दिन तो केवल पानी को ही भरने में चला जाएगा तो आप बाकी के बचे हुए कार्य कब करेंगे? लेकिन यह सच्चाई है कि हमारे देश के कुछ जगहों पर पीने का पानी तक उपलब्ध नहीं है। लेकिन भारत सरकार की जल जीवन मिशन योजना जिसे **"हर घर जल योजना"** भी कहा जा रहा है के तहत ऐसे सभी इलाकों में 2024 तक पानी को पाईप के जरिए पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। जिसको पूरा करने के लिए सरकार निरन्तर कार्य भी कर रही है।

जल जीवन मिशन (JJM)

जल जीवन मिशन की शुरूआत भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा की गयी है। यह योजना भारत सरकार के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के नागरिको के लिए शुरू की गयी है जिसके माध्यम से उन्हें पानी की सुविधा घर–घर में उपलब्ध कराई जाएगी। 15 अगस्त 2019 को सरकार के द्वारा सभी

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission

नागरिकों तक पानी की व्यवस्था उपलब्ध करवाने के लिए जल जीवन मिशन का शुभारम्भ किया गया। योजना के कार्यान्वयन के लिए केन्द्र सरकार के द्वारा 3.50 लाख करोड रूपये का एक बजट निर्धारित किया गया है। 73वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए मोदी जी ने कहा कि, देश में अभी करीब 50 फीसदी परिवार को पाईप के द्वारा पानी नही मिल पा रहा है। जल संकट का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री जी ने कहा की सरकार ने एक विशेष काम की तरफ बल देने का निर्णय लिया है और वह काम है, हमारे देश के हर घर में जल पहुँचाना। हर घर को पीने का शुद्व जल मिले, इस उद्वेश्य की पूर्ति करने के लिए उन्होने ऐलान किया कि हम इस मिशन को बहुत आगे लेकर जाएंगे, ताकि सभी को स्वच्छ और साफ जल की प्राप्ति हो सके। उल्लेखनीय है कि सरकार ने 2024 तक हर घर में नल के जरिये पानी पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। मोदी जी ने प्रत्येक घर में पानी की उपलब्धता के तहत इस मिशन की शुरूआत की है।

जल जीवन मिशन योजना उद्वेश्य

जल जीवन मिशन योजना का मुख्य उद्वेश्य है कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले उन सभी परिवारों को घर में पानी की सुविधा उपलब्ध करवाना जिन्हें पानी जैसी समस्याओं से गुजरना पडता है। पानी प्राप्त करने के लिए उन्हें दूर क्षेत्रों में कई मीलों पैदल जाना पडता है जिससे उन्हें कई परेशानियों से गुजरना पडता है। केन्द्र सरकार के इस मिशन के अंतर्गत अभी तक 50 प्रतिशत परिवारों को जल जीवन मिशन से लाभांवित किया गया है। 2024 तक देश के सभी जरूरतमंद परिवारों को पानी की सुविधा को उपलब्ध कराया जायेगा। जल जीवन मिशन के अंतर्गत सभी परिवार को पाइप के माध्यम से ताजा एवं स्वच्छ जल की सुविधा प्राप्त होगी, देश के प्रत्येक परिवार को मिशन के माध्यम से नल के पानी से जोडने का यह एक सफल प्रयास होगा। ग्रामीणों तक पानी पहुंचाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान के तहत कार्य किया जायेगा। केन्द्र सरकार के इस मिशन के तहत ग्रामीण सेंटर में रहने वाले नागरिकों को रोजगार के अवसर प्राप्त होगें जिससे उनकी आर्थिक स्तर को एक नया स्वरूप प्राप्त होगा।

ग्रामीण जल जीवन मिशन की विशेषताएं

- जल जीवन मिशन का मुख्य लक्ष्य है सभी ग्रामीण घरों तक घरेलू कार्यशील नल कनेक्शन की व्यवस्था उपलब्ध करवाना।

- घरेलू नल कनेक्शन उपलब्ध करवाने के साथ–साथ स्थानीय जल संस्थानों के प्रबंधन को बढावा दिया जायेगा।
- जल जीवन मिशन प्रत्येक ग्रामीण घर में कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन सुनिश्चित करेगा।
- योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आंगनबाडी केन्द्र, स्कूल, ग्राम पंचायत भवन, स्वास्थ्य केन्द्रों तक भी पानी के कनेक्शन उपलब्ध किये जायेंगे।

- जल जीवन मिशन स्थानीय स्तर पर पानी की एकीकृत मांग और आपूर्ति पक्ष प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित करेगा।
- जल जीवन मिशन के माध्यम से प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नल जल कनेक्शन उपलब्ध करवाने के लिए पाइपलाइन जल आपूर्ति अवसंरचना का विकास करना है।
- ग्रामीण परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए आवश्यक क्षेत्रों में बल्क वाटर ट्रांसफर शोधन सयंत्र और वितरण नेटवर्क को स्थापित किया जायेगा।
- जिन क्षेत्रों में जल गुणवत्ता की समस्या है वहां **ग्रामीण जल जीवन मिशन** के तहत प्रदूषण के निवारण हेतु प्रौद्योगिकीय माध्य परिवर्तन की व्यवस्था उपलब्ध की जाएगी।
- राज्य के जिला क्षेत्र में जल एवं स्वच्छता मिशन के तहत SWSM (State Water and Sanitation Mission) के द्वारा कार्य जायेगा।

जल जीवन मिशन के लाभ

- ग्रामीण जल जीवन मिशन के अंतर्गत घरों में पानी की व्यवस्था उपलब्ध होने से महिलाएं एवं किशोरी बालिकाओं को सबसे अधिक लाभ प्राप्त होगा उन्हें पानी लाने के लिए मीलों पैदल नही जाना पडेगा।
- महिलाओं के जीवन को आसान बनाने में जल जीवन मिशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
- घर में पानी की सुविधा उपलब्ध होने पर महिलाएं अपने काम को समय से कर पायेगी।
- जल से संबंधित सभी समस्याओं से जल जीवन मिशन के अनुसार ग्रामीण परिवारों को मुक्ति मिलेगी।
- आने वाली पीढी को जल की व्यवस्था उपलब्ध करवाने के लिए बच्चों को मिशन के तहत जल संरक्षण के बारे में भी जागरूक किया जायेगा, जिससे वह भविष्य के लिए जल का संरक्षण कर सकते है।
- **ग्रामीण जल जीवन मिशन** के तहत गॉवों में पेयजल के स्त्रोत के साधन में वृद्वि होगी।
- 19 करोड 17 लाख 20 हजार 832 ग्रामीण परिवारों को घरेलू नल कनेक्शन की सुविधा से लाभांवित किया गया है।

फंड आवंटन पात्रता एवं मानदंड

जल जीवन मिशन के वित्तीय कार्यान्वयन और वित्त पोषण: जल जीवन मिशन की कुल अनुमानित लागत 3.60 लाख करोड रूपए है जिसके लिए केन्द्र सरकार के द्वारा पहाडी क्षेत्र के राज्यों के लिए अलग–अलग रूप से केन्द्र और राज्य के बीच फंड शेयरिंग को निर्धारित किया गया है।

- उत्तराखंड राज्य के लिए जल जीवन मिशन के अंतर्गत फंड शेयरिंग पैटर्न का 90 प्रतिशत भाग केन्द्र सरकार एवं 10 प्रतिशत भाग राज्य सरकार के द्वारा देय होगा।
- हिमाचल प्रदेश और उत्तर पूर्वी राज्यों के लिए 100 प्रतिशत का फंड शेयरिंग केन्द्र सरकार द्वारा देय होगा।

- और अन्य बाकी इलाकों के लिए 50 प्रतिशत भाग केन्द्र सरकार द्वारा एवं 50 प्रतिशत भाग राज्य सरकार के द्वारा देय होगा।
- राज्य के बीच फंड के संवैधानिक आवंटन को लैफ्टआउट की संख्या को शामिल करके संशोधित किया गया है। 20 प्रतिशत वेटेज और 10 प्रतिशत वेटज के साथ अतिरिक्त मानदंड के रूप में घरेलू कनेक्शन ग्रामीण क्षेत्रों को प्रदान किया जायेगा।
- पानी की गुणवत्ता से प्रभावित जनसंख्या वाले क्षेत्रों में अधिक निधि की अनुमति प्राप्त की जाएगी।
- राज्य जल जीवन मिशन के तहत निधियों का उपयोग गुणवत्ता प्रभावित क्षेत्रों में आग्रवर्ती के लिए किया जायेगा।

राजस्थान में जल जीवन मिशन की स्थिति

- जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, राजस्थान की ओर से नव वर्ष की शुरूआत में प्रदेश के ग्रामीण परिवारों को जल जीवन मिशन (जेजेएम) के तहत 6 लाख 73 हजार 223 'हर घर जल' कनेक्शन की स्वीकृतियों की सौगात दी गई है। ये स्वीकृतियां 860 नई परियोजनाओं के तहत जारी की गई है, इन पर 6 हजार 843 करोड रूपये की लागत आएगी।
- इससे 22 जिलों अलवर, बांसवाडा, बाडमेर, भरतपुर, बीकानेर, चित्तौडगढ, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, जैसलमेर, झुन्झुनुं, जोधपुर, नागौर, पाली, प्रतापगढ, राजसमंद, सवाईमाधोपुर, सीकर, सिरोही एवं उदयपुर के 3305 गांवों में लाखों ग्रामीण परिवारों को सीधा फायदा होगा। प्रदेश में अब तक जेजेएम के तहत 36 हजार से अधिक गांवों में 9 हजार 345 ग्रामीण पेयजल परियोजनाओं में करीब 87 लाख परिवारों को 'हर घर जल' कनेक्शन की स्वीकृतियां जारी की जा चुकी है।

- **जेजेएम के अन्तर्गत राज्य स्तरीय योजना स्वीकृत समिति (एसएलएसएससी)** की बैठक में प्रदेश में नई पेयजल परियोजनाओं के अलावा डीपीआर तैयार करने एवं चार जिलों में नल कनेक्शन से शेष रही स्कूल, आंगनबाडी केन्द्र, ग्राम पंचायत, स्वास्थ्य केन्द्र एवं सामुदायिक केन्द्र जैसी संस्थाओं पर नल कनेक्शन देने के प्रस्तावों को भी मंजूरी दी गई।

- **रेग्यूलर विंगः 21 जिलों में 2 लाख 50 हजार 'हर घर जल' कनेक्शन मंजूर–** रेग्यूलर विंग के तहत प्रदेश के 21 जिलों के 1513 गांवों में 855 सिंगल एवं मल्टीविलेज परियोजनाओं में 1654.43 करोड रूपये की लागत से 2 लाख 49 हजार 995 'हर घर जल' कनेक्शन की मंजूरी दी गई है। इसमें अलवर जिले में 164 गांवों की 159 योजनाओं में 194.97 करोड रूपये की लागत से 39 हजार 121, बाडमेर जिले में 18 गांवों की 11

योजनाओं में 25.63 करोड रूपये की लागत से 2253, भरतपुर जिले में 20 गांवों की 20 योजनाओं में 19.52 करोड रूपये की लागत से 3029, बीकानेर जिले में 27 गांवों की 14 योजनाओं में 33.16 करोड रूपये की लागत से 3182, चितौडगढ जिले में 30 गांवों की 29 योजनाओं में 17.91 करोड रूपये की लागत से 2700, दौसा जिले में 48 गांवों की 34 योजनाओं में 64.94 करोड रूपये की लागत से 10 हजार 313, धौलपुर जिले में 114 गांवों की 86 योजनाओं में 139.55 करोड रूपये की लागत से 20 हजार 961, डूंगरपुर जिले में 37 गांवों की 18 योजनाओं में 274.60 करोड रूपये की लागत से 8796, श्रीगंगानगर जिले में 479 गांवों की 132 योजनाओं में 274.60 करोड रूपये की लागत से 37 हजार 315, हनुमानगढ जिले में 110 गांवों की 43 योजनाओं में 26.59 करोड रूपये की लागत से 2615, जैसलमेर जिले में 41 गांवों की 5 योजनाओं में 27.29 करोड रूपये की लागत से 6391, झुन्झुनं जिले में 24 गांवों की 21 योजनाओं में 44.47 करोड रूपये की लागत से 7027, जोधपुर जिले में 76 गांवों की 34 योजनाओं में 67.85 करोड रूपये की लागत से 8292, नागौर जिले में 01 गांवों की एक योजनाओं में 1.16 करोड रूपये की लागत से 313, पाली जिले में 89 गांवों की 61 योजनाओं में 176.94 करोड रूपये की लागत से 19 हजार 865, प्रतापगढ जिले में 67 गांवों की 64 योजनाओं में 61.68 करोड रूपये की लागत से 9230, राजसमन्द जिले में 2 गांवों की एक योजनाओं में 44.23 करोड रूपये की लागत से 40, सवाईमाधोपुर जिले में 55 गांवों की 38 योजनाओं में 88.95 करोड रूपये की लागत से 21 हजार 504, सीकर जिले में 30 गांवों की 30 योजनाओं में 28.05 करोड रूपये की लागत से 4051, सिरोही जिले में 40 गांवों की 39 योजनाओं में 73.92 करोड रूपये की लागत से 8362, तथा उदयपुर जिले में 141 गांवों की 15 योजनाओं में 163.28 करोड रूपये की लागत से 35 हजार 635 'हर घर जल' योजना के तहत कनेक्शन दिए जाएगें।

- **मेजर प्रोजेक्ट्स: 4 जिलो में 4 लाख 23 हजार 'हर घर जल' कनेक्शन स्वीकृत–** वृहद पेयजल परियोजनाओं के तहत प्रदेश के अजमेर, बांसवाडा, चित्तौडगढ, डूंगरपुर एवं जोधपुर के 1692 गांवों के लिए 5 स्कीम में 5188 करोड रूपये की लागत से 4 लाख 23 हजार 228 'हर घर जल' कनेक्शन के प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। इसमें माही डैम से बांसवाडा में 250 गाँवों की पेयजल योजना के लिए 620.76 करोड की लागत से 250 गावों में 60 हजार 46, बांसवाडा में ही गंगातलाई के 97 और आनन्दपुरी के 136 गांवों की पेयजल योजना में 710.42 करोड रूपये की लागत से 233 गांवों में 66 हजार 934, बेणेश्वर एनीकट से डूंगरपूर में साबला और सागवाडा के 212 गांवों के पेयजल प्रोजेक्ट में 427.69 करोड रूपये की लागत से 60 हजार 351, माही डैम के तहत कडाना बैकवाटर से डूंगरपूर में चिकली, सीमलवाडा, झोथरी एवं गलियाकोट के 353 गांवों की पेयजल योजना में 885.56 करोड रूपये की लागत से 95 हजार 302 तथा चम्बल नदी से चितौडगढ में 648 गांवो की पेयजल परियोजना में 2245.72 करोड रूपये की लागत से 85 हजार 123 'हर घर जल' कनेक्शन दिए जाएगें।

- **चार जिलों की संस्थाओं में 'नल कनेक्शन' के लिए भी राशि मंजूर–**
  पाली जिले में नल कनेक्शन से शेष रही स्कूल, आंगनबाडी केन्द्र, ग्राम पंचायत, स्वास्थ्य केन्द्र एवं सामुदायिक केन्द्र जैसी 607 संस्थाओं पर नल कनेक्शन देने के लिए 514.09 लाख रूपये, डूंगरपूर में नल कनेक्शन से शेष 1567 स्कूलों में नल कनेक्शन के लिए 1219.74 लाख रूपये, प्रतापगढ 135 स्कूल एवं आंगनबाडी केन्द्रों में नल कनेक्शन के लिए 96.47 लाख रूपये तथा उदयपुर व दौसा में 1067 विद्यालयों में नल कनेक्शन के लिए 861.02 लाख रूपये की स्वीकृति भी जारी की गई है।

- **डीपीआर के लिए 133.72 लाख रूपये मंजूर–**
  जोधपुर जिले में पंचायत – घेवरा–चेराई पेयजल प्रोजेक्ट के तहत 104 गांवों में 46 हजार 110 'हर घर जल' कनेक्शन देने की योजना की डीपीआर तैयार करने के लिए 133.72 लाख रूपये के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी गई है।

- **जल जीवन मिशन, राजस्थान में हडको का योगदान**
  जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा वित्तीय वर्ष 2021–2022 में कुल रु. 4000 करोड़ (रु. 2000 करोड़ की दो समान किश्तों) की राशि को राजस्थान की संस्था RWSSC को जारी किया गया। इस परियोजना की कुल राशि 13839.05 करोड़ है, जिसमे हडको का ऋण रु. 4000 करोड़ और शेष धन राशि क्रमशः भारत सरकार रु. 6263.63 करोड़, और राज्य सरकार रु. 3432.03 करोड़ और कम्युनिटी की भागीदारी राशि रु. 143.39 करोड़ है। हडको द्वारा राजस्थान राज्य के सिर्फ 8 भागों में, जिसमे कुल 59 परियोजनाएँ हैं, उनके लिए ऋण की अवमुक्ति की गयी है। इन 59 परियोजनाओं के अंतर्गत कुल 7394 गाँवों को आच्छादित किया गया है, जिसमे 18,12,341 टोंटियाँ (FHTCS) लगाने का प्रबंध किया जाएगा। जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

जिला	कुल योजनाएं	कुल लागत (करोड में)	गाँवों की संख्या	FHTC's की संख्या
अजमेर	6	1930.66	1165	212400
भरतपुर	1	343.39	131	28801
चुरू	4	1408.62	709	237152
जयपुर	2	3788.19	1007	208264
जोधपुर	15	3392.80	1797	548622
कोटा	20	1310.04	1198	222437
नागौर	6	935.80	347	131302
उदयपुर	5	905.77	1040	223363
	59	14015.27	7394	1812341

हडको द्वारा यह ऋण राज्य सरकार की गारंटी के सापेक्ष दिया गया है। राजस्थान सरकार के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण परियोजना है जो राज्य के विकास को नया आयाम तो देगी ही, अपितु राज्य के ग्रामीण निवासियों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण योजना रहेगी, चूंकि जल ही जीवन है।

डा. अरूण राणा
संयुक्त महा प्रबन्धक– परियोजना

“वित्तीय साक्षरता– फाइनेंसियल लिट्रेसी”

वित्तीय साक्षरता वित्तीय प्रबंधन, बजट और निवेश सहित विभिन्न वित्तीय कौशल को समझने और लागू करने की क्षमता है। यह ज्ञान व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है ताकि वे वित्तीय स्थिरता प्राप्त कर सकें। वित्तीय साक्षरता वित्तीय प्रबंध कौशल को ठीक से समझने और लागू करने की क्षमता है। प्रभावी वित्तीय नियोजन, ऋण का उचित प्रबंधन, ब्याज की सही गणना और धन के समय मूल्य को समझना वित्तीय रूप से साक्षर होने की विशेषताएं है। वित्तीय साक्षरता के प्राथमिक सिद्वांतों में बजट सीखना, खर्च पर नजर रखना, प्रभावी ढंग से ऋण का भुगतान करना और सेवानिवृत्ति की सही योजना इत्यादि शामिल है।

वित्तीय साक्षरता के ज्ञान की कमी के कारण व्यक्ति धोखाधडी करने वाले संस्थानों या ठगों का शिकार हो सकता है और उन्हें वित्तीय संकट का सामना करना पड सकता है। वित्तीय साक्षरता यह जानने और समझने की शिक्षा और समझ है कि धन राशि, आय के तौर पर कैसे बनाई या कमाई जा सकती है, उसे कैसे खर्च किया जा सकता है और कैसे बचाया जा सकता है? साथ ही वित्तीय संसाधनों का उपयोग करके किस तरह से उचित निर्णय लिया जाये। आय अर्जित करने की क्षमता को इस ज्ञान से विकसित भी किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किस तरह विधिक तरीके से धन अर्जित किया जाए और उस राशि का किस तरह से उपयोग किया जाए। इन फैसलों में आय अर्जित करना, निवेश करना, खर्च करना और बचत करना शामिल है। वित्तीय साक्षरता सभी प्रकार के आयु, समूह, लिंग, वर्ग और सभी स्तर के लोगों के लिए उपयोगी और आवश्यक है। यह छात्रों, माता – पिता, युवाओं, बालिकाओं, महिलाओं, बेराजगारों, निर्भर व्यक्तियों और विभिन्न प्रकार के रोजगारशुदा व्यक्तियों, वेतनभोगी व्यक्तियों, कर्मचारियों, प्रबंधकों, नियोक्ताओं, व्यवसायियों, उद्यमियों और सभी प्रकार के लोगों के लिए उपयोगी है। छात्रों के लिए वित्तीय मुद्वों का ज्ञान उन्हें बेहतर वर्तमान और भावी जीवन की योजना बनाने के लिए प्रेरित करता है। यदि कोई वित्तीय साक्षरता रखता है और उन्हे वित्त प्रबंधन करने के लिए ज्ञान है तो वे यह तय कर सकते है कि कमाई का एक निश्चित हिस्सा बचत खाते में डाला जाना चाहिए। अगर किसी को ज्ञान हो तो वह उपयुक्त स्थान पर आय को बचाने और निवेश के लिए प्रबंधन कर सकता है। जैसे आय को डाकघर या सरकारी बैंक में बचत खाते में जमा करवाया जा सकता है ताकि जमा धन सुरक्षित रहे और जरूरत पडने पर उसे आसानी से निकाल कर उपयोग में लिया जा सके।

वित्तीय साक्षरता के ज्ञान की कमी

लोगों में बचत करने की आदत डालना और लोगो के अनावश्यक खर्चो को कम करने का ज्ञान देना वित्तीय साक्षरता का महत्तवपूर्ण हिस्सा है। बहुत बार अच्छी खासी आय वाले भी आर्थिक संकट का शिकार होते देखे गये है, जिसकी मुख्य वजह उनकी

आदते है। अनावश्यक खर्चे करने की आदत से अच्छी खासी कमाई वाले भी महीने के आखिरी दिनों में अभावग्रस्त देखे जाते है। क्रेडिट काड्र्स का अत्यधिक इस्तेमाल, मासिक बजट की कोई प्लानिंग का न होना ऐसे मुख्य कारण है जिसकी वजह से अच्छी पगार की नौकरी वाले भी महीने के आखिरी दिनों में और इमरजेंसी में फाइनेंसियल क्राइसिस देखते है।

सुरक्षित भविष्य के लिए आदत और प्रबंधित आय व्यय योजना संभव है अगर आर्थिक रूप से साक्षर हों। यदि कुछ निश्चित मापदंडो का पालन किया जाता है तो लोग संकट के बिना प्रबंधित तरीके से वर्तमान और भविष्य के जीवन को जी सकते है और जीवन के प्रतिकूल महत्वपूर्ण समय में अपने अस्तित्व को बेहतर ढंग से नियंत्रित कर सकते है। जरूरत से ज्यादा उधार लेने की आदत भी दु:ख का कारण होती है। मासिक आय के अनुसार बजट प्लानिंग करनी चाहिए, आय का एक हिस्सा नियमित बचत को जाना चाहिए, जरूरत होने पर बीमारी के खर्चे और बुढापे की पेंशन के लिए बजट प्लानिंग होनी चाहिए। बचत के अलावा मेडीक्लेम बीमा, दुर्घटना बीमा, जीवन बीमा, वाहन बीमा इत्यादि हमेशा करवाना चाहिए।

लोगों को तब तक निवेश बाजार से बचना चाहिए जब तक कि उन्हें शेयर बाजार सहित किस कारोबार में कब और कितना निवेश करना है इसका पर्याप्त ज्ञान ना हो। जरूरी और अनावश्यक खर्चों की लिस्ट बनाकर जरूरी खर्चों को ही पूरा करने की कोशिश करना और इस पर प्राथमिकता दे कर अमल करना एक ऐसा उपाय है जिससे वे अपनी खर्चीली आदत पर लगाम करके अपनी बचत को बढा सकते हैं और अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकते हैं।

बेहतर व्यवसाय और एंटरप्रेन्योरशिप के लिए उपयोगी वित्तीय साक्षरता

व्यवसायियों के लिए वित्तीय साक्षरता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके कारोबार और सेवाओं में सफलता पाने के लिए अपने व्यवसाय को अच्छी तरह से प्रबंधित करने का ज्ञान संसाधन है। इससे वे जान सकते है कि उनकी आय क्या है। वे अपना टर्न ओवर व लाभ बढाने के लिए अधिक विकल्पों का आंकलन कर सकते है। व्यवसायी और उद्यमी वित्तीय रिकार्ड और क्रेडिट रेटिंग की

निगरानी करके अपने लाभ की स्थिति भी सुनिश्चित कर सकते हैं। वित्तीय लक्ष्यों की अवधि के अनुसार खर्च करने के लिए वे उपयुक्त लेखांकन अवधारणाओं का उपयोग कर प्राथमिकताओं के आधार पर वित्तीय फैसलों को तय करने, अमल करने और निवेश करने के बारे में आश्वस्त हो सकते है। इससे उन्हे कारोबार में होने वाले ट्रांजेक्शन और लाभ के बारे में जानने में मदद मिलती है। इस प्रकार वित्तीय साक्षरता एक ऐसा तरीका व ज्ञान संसाधन है जिससे सभी अपनी बचत को बढाने की समझ विकसित करके तथा अपने खर्चो पर नियंत्रण लगाकर अपनी मौजूदा व भावी वित्तीय स्थिति को मजबूत व बेहतर बना सकते है।

रेनू चौधरी
उप प्रबन्धक –वित्त

"प्रधानमंत्री आवास योजना – शहरी, राज्य में उपस्थिति"

आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (एमओएचयूए), भारत सरकार ने देश में प्रधानमंत्री आवास योजना–शहरी (पीएमएवाई–यू) –क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना (सीएलएसएस) के कार्यान्वयन के लिए हडको को केन्द्रीय नोडल एजेंसी (सीएनए) में से एक के रूप में नामित किया है। सीएनए की भूमिका में विभिन्न बैंको/पीएलआई के ईडब्ल्यूएस/ एलआईजी /एमआईजी लाभार्थियों को केन्द्रीय सब्सिडी देना शामिल है, जिनके साथ हडको ने पीएमएवाई (यू) कार्यक्रम के क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना घटक के तहत समझौता ज्ञापन (एमओयू) निष्पादित किया है।

अधिक पारदर्शिता, दक्षता लाने और सब्सिडी वितरण प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए, सीएलएसएस आवास पोर्टल (सीएलएपी) को 25.11.2019 को एमओएचयूए द्वारा लॉन्च किया गया था, जो पहले के पोर्टल का एक उन्नत संस्करण है और इसमें सब्सिडी आवेदनों की जॉच प्रक्रिया का स्वचालन शामिल है। पारदर्शिता और त्वरित संवितरण के लिए अग्रणी, आधार सत्यापन को सक्षम करना, विभिन्न कार्यक्षेत्रों के बीच डी–डुप्लीकेशन जाँच आदि। सीएलएपी पोर्टल एफआईएफओ (फर्स्ट–इन–फर्स्ट–आउट) के आधार पर सब्सिडी के वितरण पर बनाया गया है जो क्रमिक आधार पर सब्सिडी जारी करना सुनिश्चित करता है।

हडको ने केन्द्रीय नोडल एजेंसी (सीएनए) के रूप में ईडब्ल्यूएस/एलआईजी श्रेणी के लिए 90 बैंको/प्रधान उधार संस्थानों (पीएलआई) के साथ समझौता ज्ञापन निष्पादित किया है जिसमें 2 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, 5 निजी क्षेत्र के बैंक, 1 एनबीएफसी–एमएफआई, 1 लघु वित्त बैंक, 12 ग्रामीण बैंक और 69 सहकारी बैंक शामिल है।

इसके अलावा, एमआईजी–वन और एमआईजी–टू श्रेणी के लिए हडको ने 79 बैंको / पीएलआई के साथ एमओयू निष्पादित किया है जिसमें 2 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, 5 निजी क्षेत्र के बैंक, 1 एनबीएफसी, 13 ग्रामीण बैंक और 58 सहकारी बैंक शामिल है।

इसके अलावा, 01.01.2017 से भारत सरकार ने क्रमशः 6–12 लाख रूपये और 12–18 लाख रूपये की वार्षिक आय के साथ एमआईजी–वन और एमआईजी–टू श्रेणी के लिए सीएलएसएस सब्सिडी बढ़ा दी है। इस श्रेणी के अंतर्गत रूपये 9.00 लाख तक के आवास ऋण और रूपये 12.00 लाख तक के आवास ऋण के लिए 4 प्रतिशत और 3 प्रतिशत की सब्सिडी दी जाती है, जो क्रमशः एमआईजी–वन और एमआईजी–टू के लिए अधिकतम 2.35 लाख और 2.30 लाख रूपये है।

राजस्थान राज्य में, राजस्थान राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड, राजस्थान मरूधर ग्रामीण बैंक, बड़ौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, केन्द्रीय सहकारी बैंक, आदर्श सहकारी बैंक लिमिटेड और मालवीय शहरी सहकारी बैंक ने सीएलएसएस के लिए समझौता ज्ञापन ईडब्ल्यूएस/एलआईजी और एमआईजी के लिए निष्पादित किया है। यह राष्ट्रीय स्तर के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों जैसे बैंक ऑफ बड़ौदा, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया और कुछ अन्य निजी क्षेत्र के बैंकों के साथ समझौता ज्ञापन के अतिरिक्त है, जिनकी अखिल भारतीय उपस्थिति है।

पिछले छः वर्षों के दौरान 2015–2016 से 2021–2022 के दौरान, हडको ने केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में राजस्थान राज्य में ईडब्ल्यूएस/एलआईजी श्रेणी के तहत 5010 लाभार्थियों को सीएलएसएस सब्सिडी के रूप में 10781.84 लाख रूपये तथा एमआईजी श्रेणी के तहत 1129 लाभार्थियों को सब्सिडी 2301.97 लाख रूपये वितरित किए हैं। हडको ने केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में ईडब्ल्यूएस/एलआईजी तथा एमआईजी श्रेणी के तहत वर्ष 2021–2022 में कुल 2870 लाभार्थियों को 6799.08 लाख रूपये वितरित किए गये जो कि योजना के शुरूआत अर्थात वर्ष 2015 से वर्ष 2020–2021 तक की अब तक वितरित सम्पूर्ण सब्सिडी राशि से भी ज्यादा अनुदान अवमुक्त किया गया है।

ईडब्ल्यूएस/एलआईजी और एमआईजी श्रेणी के तहत 2018–2019, 2019–2020, 2020–2021 और 2021–2022 के दौरान राजस्थान राज्य में सब्सिडी वितरण का वर्षवार विवरण निम्नानुसार हैः–

(राशि लाख में)

वित्त वर्ष	ईडब्ल्यूएस/एलआईजी		एमआईजी		कुल (ईडब्ल्यूएस/एलआईजी/एमआईजी)	
	घरों की संख्या	अनुदान राशि	घरों की संख्या	अनुदान राशि	घरों की संख्या	अनुदान राशि
2015-2016	2	2.06	0	0	2	2.06
2016-2017	152	142.78	0	0	152	142.78
2017-2018	257	301.93	25	45.08	282	347.01
2018-2019	784	1303.91	132	258.78	916	1562.69
2019-2020	158	385.95	59	118.09	217	504.04
2020-2021	789	1848.72	896	1845.30	1685	3694.02
2021-2022	2868	6796.49	17	2.59	2870	6799.08
कुल	**5010**	**10781.84**	**1129**	**2301.97**	**6139**	**13083.81**

नरेश कुमार ठागरिया
सयुंक्त महाप्रबन्धक (आई.टी.)

"आवास संतुष्टि: विश्लेषण और व्याख्या सहित मूल्यांकन"

परिचय

इतिहास की शुरूआत से, आवास ने, एक आश्रय के रूप में मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आवास केवल ईंटों और गारे से अधिक है और यह एक व्यक्ति समुदाय का निर्माण खंड है, और समुदाय सामाजिक संबंधों का एक भंडार बनाता है। आवास की अवधारणा व्यक्ति के रहन–सहन पर नहीं है। यह समग्र भौतिक और सामाजिक घटकों का एक सम्मिश्रण है जो आवास प्रणाली का निर्माण करता है। गृहस्वामी सामाजिक संबंध में दूसरों के साथ संवाद करके वांछित सामाजिक स्थिति तक पहुँचने में सक्षम होते हैं क्योंकि यह घर के मालिकों के बीच आत्म–सम्मान को बढ़ावा देते हैं। अपने द्वारा उत्पादित आवास की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए, आवास क्षेत्र को उपयोगकर्ताओं की जरूरतों और अपेक्षाओं के साथ–साथ नियमित प्रदर्शन मूल्यांकन के माध्यम से इस तरह की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा करने की सीमा का पता लगाना और समझना एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। टेक होम–2011 ने इसी तरह के दृष्टिकोण को साझा करते हुए कहा कि घरेलू आवास की जरूरतों को पूरा करने का एक संभावित तरीका उन कारकों की जाँच करना है जो निवासियों की संतुष्टि या उनके आवास की स्थिति से असंतोष के लिए जिम्मेदार हैं। ये विचार निस्संदेह आवासीय संतुष्टि पर अध्ययन की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं ताकि आवास प्रदान करने की तलाश में रहने वालों की दैनिक जरूरतों, अपेक्षाओं और प्राथमिकताओं को पूरा किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता

घर के मालिक की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को सामाजिक, भौतिक और व्यक्तिगत कारकों में वर्गीकृत किया जा सकता है। सामाजिक वातावरण में सामाजिक

अंतः क्रियाएं, संबंध और सामाजिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं जिसमें व्यक्ति भाग लेता है। एक समुदाय के भीतर मजबूत सामाजिक नेटवर्क व्यक्ति के संतुष्टि के स्तर को बढ़ाते हैं क्योंकि वे समर्थन और सामाजिक संपर्क प्रदान करते हैं और पर्यावरण की स्थिति खराब होने पर क्षतिपूर्ति कर सकते हैं अपने समुदाय के प्रति लगाव का स्तर उसके आवासीय संतुष्टि के स्तर को प्रभावित करता है। एक व्यक्ति अपने समुदाय के भीतर अपने सामाजिक, आर्थिक और अस्थायी निवेश के माध्यम से अपने समुदाय के प्रति लगाव विकसित करता है। यदि निवासी अपने समुदाय को असुरक्षित मानते हैं, तो उनके संतुष्ट होने की संभावना कम होती है।

यह पाया गया है कि सामुदायिक लेआउट और डिजाइन के विभिन्न पहलू (जैसे सार्वजनिक खुले स्थान, सेवाओं और सुविधाओं के लिए निकट यात्रा दूरी, सौंदर्य सुखदता और आवास की न्यूनतम घनत्व का निर्माण) समुदाय के प्रति व्यक्ति के लगाव को बढ़ाते हैं जो बदले में आवास संतुष्टि को बढ़ाता है, जबकि आवास परिसरों में अत्यधिक शोर और पार्कों की कमी, समुदाय के प्रति लगाव को कम करती है और जिससे आवासीय संतुष्टि की कमी हो जाती है। आवासीय संतुष्टि भी समुदाय की साफ–सफाई से निर्धारित होती है।

एक व्यक्ति जितना अधिक समय तक किसी समुदाय में रहता है, समुदाय की भागीदारी और व्यापक सामाजिक नेटवर्क के कारण उस समुदाय के प्रति उसका लगाव उतना ही मजबूत हो जाता है। यह बदले में आवासीय संतुष्टि के उच्च स्तर का परिणाम होता है। यह पाया गया है कि नए निवासी भौतिक मुद्धों से अधिक चिंतित हैं जबकि दीर्घकालिक निवासी सामुदायिक सुधार से अधिक चिंतित हैं।

जातीयता भी आवासीय संतुष्टि का एक निर्धारक है, लेकिन उच्च सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में विभिन्न जातीय समूहों के बीच आवासीय संतुष्टि की जाँच करने वाले अध्ययनों में अनुभव किए गए आवासीय संतुष्टि के स्तर में कोई अंतर नहीं पाया गया है, क्योंकि उच्च आय निकट आर्थिक अपेक्षाओं की ओर ले जाती है। परिणामस्वरूप, आय स्तर संभवतः जातीयता की तुलना में आवासीय संतुष्टि पर अधिक प्रभाव डालती है।

घर एक अलग सामाजिक समूह के अनन्य उपयोग के लिए सुविधाओं का एक संग्रह है और इस अवधारणा में शामिल सुविधाएं सामान्य जीवन स्तर में वृद्धि के रूप में काफी अनुमानित तरीके से बदलती प्रतीत होती हैं। आवास एक ऐसा क्षेत्र है जो विभिन्न जरूरतों को जोड़ता है जैसेः जल आपूर्ति, स्वच्छता, बिजली, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जल निकासी, पार्किंग, आवास की अच्छी संरचनात्मक गुणवत्ता, आवास में उपयोग की जाने वाली अच्छी विशिष्टता या गुणवत्ता वाली निर्माण सामग्री, कम भीड़–भाड़ और सुरक्षित आवासीय स्थिति।

सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और भौतिक कारकों में सामुदायिक स्थान, स्वास्थ्य और चिकित्सा सुविधा, शिक्षा सुविधा, मानसिक शांति, सामाजिक संपर्क, पर्यावरणीय पहलू आदि शामिल हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि विभिन्न एजेंसियों द्वारा निर्मित मकानों के मकान मालिकों की संतुष्टि पर प्रभाव सामाजिक–मनोवैज्ञानिक और भौतिक वातावरण के अनुसार भिन्न–भिन्न होता है। विभिन्न एजेंसियों, यानी निजी बिल्डर, सरकारी एजेंसियों और स्वयं निर्मित घरों द्वारा निर्मित घरों की गृहस्वामी की संतुष्टि के सामाजिक, भौतिक, मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर विभिन्न मुद्धों का विश्लेषण करने के लिए आवास संतुष्टि का एक मूल्यांकन चुना है।

लक्ष्य और उद्धेश्यः यह अध्ययन मुख्य रूप से गृहस्वामी के संतुष्टि स्तर और शहरी क्षेत्र के व्यवहार पहलुओं और प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए किया गया था। अध्ययन के प्रमुख उद्धेश्य थेः

1. मकान मालिक के मुद्धों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के संबंध में आवास के निर्मित वातावरण की जाँच करना।
2. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों के डिजाइन और अन्य प्रभावों पर अनुभवजन्य साक्ष्य का विश्लेषण करना।

3. आवास में गृहस्वामियों के रहन–सहन के पैटर्न, सामाजिक मनोवृत्तियों और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं की जाँच करना।
4. आवास में गृहस्वामियों के बेहतर जीवनयापन के लिए संतुष्टि के उपयुक्त सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मानदंड विकसित करना।
5. आवास के निर्मित वातावरण को सामंजस्यपूर्ण और सुखी जीवन के लिए तुलनात्मक रूप से अधिक अनुकूल बनाने के लिए कुछ दिशानिर्देश विकसित करना।

वर्तमान शोध प्रकृति में विश्लेषणात्मक है, इसलिए निम्नलिखित शोध प्रश्न तैयार किए गए हैं :–

1. क्या निजी बिल्डर, सरकारी बिल्डर और स्वयं निर्मित मकानों के मकान मालिकों के बीच संतुष्टि स्तर में कोई अंतर है?
2. क्या आच्छादित /निर्मित क्षेत्र के कारण मकान मालिकों के बीच संतुष्टि के स्तर में कोई अंतर है?
3. क्या सामाजिक वातावरण, मनोवैज्ञानिक वातावरण और भौतिक वातावरण के कारण घर के मालिकों के बीच संतुष्टि के स्तर में कोई अंतर है?

संस्तुति

घर के मालिकों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न मुद्दों पर ध्यान दिया गया है, जो विभिन्न जनसांख्यिकीय प्रोफाइल के अनुसार भिन्न है। अध्ययन से मुख्य सिफारिशें इस प्रकार हैं:

- सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए सार्वजनिक स्थानों, सामुदायिक हॉल, आम सार्वजनिक सभा स्थलों, सार्वजनिक पुस्तकालय आदि में वृद्धि के साथ–साथ आवास क्षेत्रों के भीतर सही सुविधाएं प्रदान करके अलगाव के कारण होने वाली आवास संतुष्टि के निम्न स्तर को कम किया जा सकता है।
- दीपावली, ईद, क्रिसमस, होली आदि जैसे प्रमुख सामाजिक आयोजनों को संयुक्त रूप से मनाने पर गृह स्वामी की संतुष्टि के स्तर को बढ़ाया जा सकता है।
- अकेलेपन की भावना के कारण उत्पन्न असंतोष को अपनेपन, पारस्परिकता और परिचितता के विकास के लिए सुविधाएं प्रदान करके समाप्त किया जा सकता है।
- छूटी हुई हरियाली को छोटे–छोटे पेड़ लगाकर और टैरेस गार्डन, किचन गार्डन आदि बनाकर मिटाया जा सकता है।
- पर्यावरण पर व्यक्तिगत नियंत्रण के कारण उत्पन्न होने वाली असुविधा को घर के मालिकों के बीच कचरा फेंकने, अतिक्रमण हटाने और स्वच्छता आदि के बारे में जागरूकता में सुधार करके नियंत्रित किया जा सकता है।
- संबंधित कानूनों के कार्यान्वयन और वाहनों के पर्याप्त रखरखाव से वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है।
- पार्किंग की समस्या और गलियों के संकरे होने के कारण होने वाले यातायात की भीड़ को मल्टी लेवल पार्किंग का निर्माण करके, किनारे की नालियों को कवर करके और सड़कों पर अतिक्रमण को हटाकर कम किया जा सकता है।
- ठोस कचरा प्रबंधन प्रणाली को उचित रूप से डिजाइन और रखा गया कचरा निपटान सुविधाएं, कचरा हटाने के लिए दैनिक सुविधाएं और निवासियों को बाहर कचरा फेंकने से बचने के लिए शिक्षित करके सुधार किया जा सकता है।

- जल आपूर्ति प्रणाली जो असुविधा पैदा करती है, को जमीन और छत के स्तर पर पर्याप्त जल भंडारण प्रणाली का प्रावधान करके कम किया जा सकता है ताकि पर्याप्त उपकरण स्थापित करके नियमित जल आपूर्ति, सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित किया जा सके।
- असुरक्षा, भय और तनाव के कारण उत्पन्न दहशत को खत्म करने के लिए अग्निशमन प्रणाली, त्वरित और सुरक्षित आग से बचने, भूकंप प्रतिरोधी बनाने के लिए भवनों की रेट्रोफिटिंग की पर्याप्त व्यवस्था की जा सकती है।

- देर रात की पार्टियों / धार्मिक समारोहों, घर के अंदर और बाहर खेलने वाले बच्चों द्वारा उत्पन्न शोर को भी उचित रूप से डिजाइन किए गए सामुदायिक हॉल से कम किया जा सकता है। आस पास के बच्चों के खेलने की सुविधा और निवासियों को शोर से बचने के लिए शिक्षित करके कम किया जा सकता है।
- पर्यवेक्षणों को लगाकर बच्चों की सुरक्षा और बच्चों को लावारिस छोड़ने के कारण उत्पन्न होने वाले भय, चिंता और तनाव से बचा जा सकता है।

डॉ. दीप्ति पांडे राणा
एसोसिएट प्रोफेसर,
एमिटी स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग,
एमिटी यूनिवर्सिटी,
लखनऊ

कोरोना के बाद शिक्षा का स्तर

कोरोना वायरस की चपेट में लगभग 190 देश आ चुके है तथा इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पडा है। इसकी वजह से कई देशों में लॉकडाउन तथा कर्फ्यू की स्थिति आ गई थी जिसके कारण ऑनलाइन काम तथा पढाई का प्रचलन हुआ । कोरोना का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पडा है।

कर्फ्यू के कारण शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली प्रारम्भ हुई। इस ऑनलाइन शिक्षण का दूरगामी प्रभाव पडा इससे कुछ छात्रों को जो पढाई में रूचि रखते है उन्हें नये विकल्प मिले दूसरी ओर ऐसे छात्र भी थे जो पढाई के प्रति गम्भीर नही थे किन्तु कोरोना के कारण पास हो गये। शिक्षण ऑनलाइन व परीक्षा ऑनलाइन होने का असर आगे के वर्षो में परीलक्षित होगा क्योंकि कई अयोग्य बच्चे भी इस व्यवस्था से उत्तीर्ण हो गये।

ज्योषिता शर्मा
पुत्री नन्द किशोर

दीर्घ सेवा पुरस्कार

सतर्कता दिवस कार्यक्रम

राजभाषा पखवाड़ा कार्यक्रम

“हिंदी के विकास का सफरनामा, हिंदी कैसे बनी भारत की हृदय की भाषा”

हिंदी भाषा के विकास की जब भी बात आती है तो मुझे आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिचन्द्र की दो पंक्तियां याद आती हैः–

“निज भाषा उन्नति रहे,
सब उन्नति के मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
रहत मूढ के मूढ।।

उपरोक्त दोहे से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि आधुनिक हिंदी के जनक भारतेन्दु हरिचन्द्र को अपनी भाषा हिंदी से कितना लगाव था। यदि हम हिंदी भाषा के विकास की बात करें तो यह कहना गलत नही होगा कि पिछले सौ सालों में हिंदी का बहुत विकास हुआ है और दिन– प्रतिदिन इसमें और तेजी आ रही है। हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है, जिसे आर्य भाषा या देवभाषा भी कहा जाता है। हिंदी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है, साथ ही ऐसा भी कहा जाता है कि हिंदी का जन्म संस्कृत की ही कोख से हुआ है। भारत के संस्कृत 100 ई0 पू0 से 1000 ई0 पूर्व तक रही, ये भाषा दो भागों में विभाजित हुई– वैदिक और लौकिक। मूल रूप से वेदों की रचना जिस भाषा में हुई है उसे वैदिक संस्कृत कहा जाता है, जिसमें वेद और उपनिषद का जिक्र आता है। जबकि लौकिक संस्कृत में दर्शन ग्रंथों का जिक्र आता है।

इस भाषा में रामायण, महाभारत, नाटक, व्याकरण आदि ग्रंथ लिखे गए है। संस्कृत के बाद जो भाषा आती है वह है पालि। पालि भाषा 500 ई0 पू0 से पहली शताब्दी तक रही और इस भाषा में बौद्व ग्रंथों की रचना हुई।

बौद्व ग्रंथों में बोलचाल की भाषा का शिष्ट और मानक रूप प्राप्त होता है। पालि के बाद प्राकृत भाषा का उद्वव हुआ। यह पहली ईस्वी से लेकर 500 ई0 तक रही। इस भाषा में जैन साहित्य काफी मात्रा में लिखे गये थे। पहली ई0 तक आते–आते यह बोलचाल की भाषा और परिवर्तित हुई तथा इसको प्राकृत की संज्ञा दी गई। इस दौर मे जो बोलचाल की आम भाषा थी वह सहज ही बोली व समझी जाती थी, वह प्राकृत भाषा कहलाई। दरअसल, उस समय इस भाषा में क्षेत्रीय बोलियों की संख्या बहुत सारी थी, जिनमें शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड, मराठी, मागधी और अर्धमागधी आदि प्रमुख है। प्राकृत भाषा के अंतिम चरण से अपभ्रंश का विकास हुआ ऐसा माना जाता है। यह भाषा 500 ई0 से 1000 ई0 तक रही। अपभ्रंश के ही जो सरल और देशी भाषा शब्द थे उसे अवहट्ट कहा गया और इसी अवहट्ट से ही हिंदी का उद्वव हुआ। ऐसा कहा जाता है कि हिंदी का जो विकास हुआ है वह अपभ्रंश से हुआ है और इस भाषा में कई आधुनिक भारतीय भाषाओं और उपभाषाओं का जन्म हुआ है, जिसमें शौरसेनी (पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी और गुजराती), पैशाची (लंहदा, पंजाबी), ब्राचड (सिन्धी), खस (पहाडी), महाराष्ट्री (मराठी), मागधी (बिहारी, बांग्ला, उडिया और

असमिया), और अर्ध मागधी (पूर्वी हिंदी) शामिल है।

नोट के तौर पर यह भी कहा जाता है कि हिंदी के कई अधिकांश विद्वान हिंदी का विकास अपभ्रंश से ही मानते है। वहीं कई विद्वानों का मानना है कि हिंदी का उद्‌भव अवहट्‌ट से हुआ। बता दें कि अवहट्‌ट नाम का जिक्र मैथिल महान कवि कोकिल विद्यापति की 'कीर्तिलता' में आता है। पूरे देश के भक्त कवियों ने अपनी वाणी को जन–जन तक पहुंचाने के लिए हिंदी का सहारा लिया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी और हिंदी पत्रकारिता की बहुत अहम भूमिका रही। महात्मा गांधी सहित अनेक राष्ट्रीय नेता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप मे देखने लगे थे। भारत के स्वतंत्र होने के बाद 14 सितंम्बर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित कर दिया गया। यह तो था हिंदी के विकास का सफरनामा।

हिंदी भाषा के विकास में यदि और जानने की कोशिश करेंगे तो हिंदी भारतीय गणराज्य की राजकीय और मध्य भारतीय–आर्य भाषा है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार, लगभग 25.79 करोड भारतीय हिंदी का उपयोग मातृभाषा के रूप में करते हैं, जबकि लगभग 42.20 करोड लोग इसकी 50 से अधिक बोलियों में से एक इस्तेमाल करते हैं। सन् 1998 के पूर्व, मातृभाषियों की संख्या की दृष्टिकोण से विश्व मे सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आंकडे मिलते थे, उनमें हिंदी को तीसरा स्थान दिया जाता था। हिंदी विश्व की लगभग 3000 भाषाओं में से एक है। इतनी ही नहीं हिंदी आज दुनिया की सबसे बडी आबादी द्वारा बोली और समझे जानी वाली भाषा है। भाषाई सर्वेक्षणों के आधार पर दुनिया की आबादी का 18 प्रतिशत इसे समझता है, जबकि अन्य भाषा की बात करें तो चीनी भाषा मैंडरीन समझने वालों की संख्या 15.27 और वहीं अंग्रेजी समझने वालों की संख्या 13.85 प्रतिशत कही गई है।

हिंदी को हम भाषा की जननी, साहित्य की गरिमा, जन–जन की भाषा और राष्ट्रभाषा भी कहते है। ऐसे में यह कहना कतई गलत नहीं होगा कि हिंदी भविष्य की भाषा है। हां, एक बात जरूर है कि हम इस भाषा का प्रयोग वास्तविक जीवन में जरूर करते है लेकिन यह रोजगार और महत्वाकांशी की भाषा बनने में थोडी कारगर नहीं बन पाई। इससे यह जाहिर नहीं होता है कि हिंदी का विकास नही हुआ। उपरोक्त में कई ऐसे तथ्य है, जो पूर्ण रूप से साबित करते हैं कि हिंदी का विकास कितना तेजी से हुआ है। हमारे देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री अपना बधाई संदेश हिंदी में प्रसारित करते है क्योंकि हिंदी भाषा अपनत्व का बोध कराती है।

भविष्य में हिंदी का वर्चस्व कम से कम दक्षिण एशिया के क्षेत्रों में तो अवश्य ही रहेगा और इसका

कारण है कि बहुत बडे वर्ग का हिंदी भाषा जानना। हिंदी भाषा की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि विश्व की शीर्षतम सॉफ्टवेयर कम्पनी माइक्रोसॉफ्ट ने अपने उत्पादों को हिंदी में बनाना भी शुरू किया है। एक

कंपनी जो सारे विश्व में अंग्रेजी भाषा में अपने उत्पाद बेचती है, पर भारत में वह अपने सॉफ्टवेयर हिंदी में ला रही है। इतना ही नहीं, जितनी भी मोबाइल कम्पनियों हैं सभी ने सारे हैडसेट्स में भारतीय भाषाओं को भी शामिल करना शुरू कर दिया है। यह इस बात का इशारा है कि भारतीय जनमानस में हिंदी भाषा का कितना वर्चस्व है। यहां तक की सारे डिजिटल माध्यमों में हिंदी की पहुंच बढी है। चाहे वह बैंक एटीएम हो या किसी सरकारी या गैर–सरकारी फॉर्म या अन्य। सारे माध्यमों में हिंदी का विकास तेजी से हो रहा है। हिंदी को हम भाषा की जननी, साहित्य की गरिमा, जन–जन की भाषा और राष्ट्रभाषा भी कहते है एक बात ध्यान देने योग्य है कि अपने शैशव काल से लेकर आज तक इंटरनेट ने जो सीढियां चढीं है वो अपने आप में प्रतिमान है, लेकिन जितनी प्रसिद्वी हिंदी भाषा को वेबसाइटों को मिलती है, उतनी किसी और को नहीं मिलती। इसके साथ ही यदि भारत में आप हिंदी और अंग्रेजी समाचार चैनल की बात करेंगे तो आपको बखूबी पता चल जाएगा कि किस भाषा के चैनल की डिमांड और टीआरपी ज्यादा है। भारत में कोई भी वस्तु तब तक नहीं प्रचलित होती है, जब कि उसमें भारतीयता का पुट न सम्मिलित हो, इसलिए हिंदी भाषा वो पुट है, जिसके बिना ख्याति संभव नहीं।

हिंदी भाषा की जितनी मांग है, इंटरनेट पर उतनी उपलब्धता नहीं है। लेकिन जिस रफ्तार से भारत में इंटरनेट का विकास हुआ है, उसी तरह से हिंदी भी इंटरनेट पर छाई रही हैं। समाचार पत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। साधुवाद तो गूगल को भी जाता है, जिसने हिंदी में खोज करने की जगह

उपलब्ध कराई। इतना ही नहीं विकिपीडिया ने भी हिंदी की महत्ता को समझते हुए कई सारी सामग्री का सॉफ्टवेयर अनुवाद हिंदी में प्रदान करना शुरू कर दिया, जिससे हिंदी भाषी को किसी भी विषय की जानकारी सुलभ हुई। आज के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भी इंटरनेट की एक अहम लोकप्रिय भाषा बनकर उभरी है और ऐसा माना जाता है कि जब लोग अपने विचार और लेखन हिंदी भाषा में इंटरनेट पर और ज्यादा करेंगे तो वह दिन दूर नहीं की सारी सामग्री हिंदी में भी इंटरनेट पर मिलने लगेगी।

भाषा नदी की धारा के समान चंचल होती है। यह रूकना नहीं जानती, यदि कोई भाषा को बलपूर्वक रोकना भी चाहे तो यह उसके बंधन को तोड आगे निकल जाती है। यही भाषा की स्वाभाविक प्रकृति और प्रवृत्ति है, चाहे कोई भी भाषा क्यों ना हो। अंत में मैं यह कहना चाहता हूँ कि हिंदी भाषा सबसे अहम है, क्योंकि इसमें हमारा मान है।

शैलेन्द्र सिंघवी
सहायक प्रबन्धक– वित्त

"आधुनिक संचार क्रांति"

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसका विकास ही आपसी समन्वय एवं विचारों के आदान प्रदान द्वारा हुआ है। प्रथमतया तो विचार केवल प्रत्यक्ष रूप से ही सांझा किये जाते थे। धीरे – धीरे इसमें पत्रों का आदान प्रदान किया जाने लगा जिसमें पक्षियों एवं जानवरों (जैसे घोडा आदि) का सहयोग लिया जाने लगा। फिर आधुनिक युग में डाकघर आदि की सुविधा का आरंभ हुआ। परन्तु इन सब माध्यमों से सूचना पंहुचाने मे

बहुत समय लगता था। तार की ईजाद के साथ में सूचना एवं संचार के क्षेत्र में क्रांति आ गई। जब लोग मीलों दूर बैठे हुए आपस में बात कर पाए। फिर आया इंटरनेट जिसने ई – मेल के माध्यम से पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया । सन् 2000 के बाद से तो संचार की दुनिया में अभूतपूर्वक वृद्वि हुई है जो पहले ना देखा ना सुना था अपितु सोचने पर भी विवश कर दिया। परन्तु यही वर्तमान का सत्य है।

वर्तमान समय में सोशल मीडिया, ई – मेल आदि ही संचार के मुख्य साधन है। पूरा विश्व जैसे एक परिवार बन गया है। ग्लोबलाइजेशन के जमाने में सभी कुछ वैश्विक बन गया है। कहीं भी बैठे हुए हजारों – लाखों मील न केवल बात कर सकते हैं, अपितु वीडियो द्वारा अपनत्व का अहसास भी कर सकते हैं। इसके साथ ही हजारों नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। मनुष्य की प्रगति दिन दुगनी, रात चौगुनी गति से बढ रही है। व्यापार आदि सब इलैक्ट्रानिक माध्यम से पूर्ण किए जा रहे है। आधुनिक संचार क्रांति का सबसे व्यापक रूप ''कोरोना महामारी'' के दौरान देखने को मिला। कोरोना महामारी ने सभी को अपने–अपने घरों में बंद कर दिया था। यदि संचार का माध्यम इतना व्यापक ना होता तो विश्व शायद 100 साल पीछे चला जाता। परन्तु ऐसा कुछ नही हुआ। विश्व के सभी दिग्गज नेता, डाक्टर, रिसचर्स, मददगार सब वर्चुअल प्लेटफार्म पर जुडे रहे और इतनी भयावह महामारी से निपटने में सभी ने एक साथ मिलकर (जबकि अपने घर से निकलना भी संभव नही था) जी जान से काम किया और हर मोर्चे पर पूरा विश्व साथ खडा रहा। इस समय लोगों के सभी भौतिक काम छूट गए पर संचार के माध्यम से नए व्यापारों का सृजन हुआ और इतने कठिन समय में भी लोग एक दूसरे से जुड कर इस परेशानी से निबटने में सक्षम रहे। इस महामारी ने लोगों को बिल्कुल अकेला कर दिया था, पर केवल संचार क्रांति की मदद से लोग स्वयं को मानसिक रूप से संतुलित रख पाए। बच्चों की ऑनलाईन कक्षाएं लगी और, कार्यालयों में'' वर्क्र फ्राम होम'' को बढावा दिया गया। कहने का तात्पर्य है कि यदि संचार क्रांति नही हुई होती तो इस महामारी के दौरान पूरा विश्व थक जाता, रूक जाता।

संचार क्रांति केवल बातें करने का ही माध्यम नहीं है, अपितु वित्तीय मामलों में भी अग्रणी साबित हुई है। ''इलैक्ट्रानिक मनी'' आधुनिक सत्य है, आज सभी छोटे बडे सामानों के लिए आपको रूपया पैसा साथ ले कर चलने की आवश्यकता नहीं है। सभी कार्य केवल एक मोबाईल के सहारे सम्पन्न हो जाते है।

वैसे तो आधुनिक संचार क्रांति ने विश्व का भला ही किया है परन्तु कहते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह से संचार माध्यमों का गलत इस्तेमाल इन्हें इतना ही डरावना बना देता है जैसा कि नफरत फैलाने वालों के लिए भी सोशल मीडिया उपलब्ध है और एक नकारात्मक सोच कुछ ही क्षणों में विश्व में फैल जाती है। कोई एक छोटी सी जाली खबर पूरे विश्व में बहुत कम समय में ही तहलका मचा सकती है। वित्तीय आदान प्रदान के दौरान घोटाले भी बहुत खतरनाक होते हैं। अतः अंत में यही कहना चाहूंगी कि हमे जो ये संचार के माध्यम से एक अच्छी जिन्दगी प्राप्त हुई है उसका हमे बहुत जिम्मेदारी के साथ प्रयोग करना चाहिए। एक बहुत पुरानी कहावत है कि '' अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती है''। अतः हमें इन सभी माध्यमों का इस्तेमाल बहुत सोच समझकर करना होगा। सोशल मीडिया पर आने वाली हर खबर को फॉरवर्ड करने से पहले उसकी सत्यता जांच लेनी चाहिए। वित्तीय मामलों में सतर्कता बरतते हुए ही इन माध्यमों का इस्तेमाल करना चाहिए। तभी हम इस वरदान को अभिशाप बनाने से रोक पायेगें और इस दुनिया को और अधिक सुन्दर बनते देख पायेगें।

अंजु गर्ग
प्रबन्धक –सचिवीय

"नीति सूत्र"

नीति शास्त्र कहते हैं कि नीच और अधम श्रेणी के मनुष्य- कठिनाईयो के भय से किसी उत्तम कार्य को प्रारंभ ही नहीं करते। मध्यम श्रेणी के मनुष्य - कार्य को तो प्रारंभ करते हैं मगर विघ्नों को आते देख घबराकर बीच में ही छोड़ देते हैं। ये विघ्नों से लड़ने की सामर्थ्य नहीं रख पाते।

उत्तम श्रेणी के मनुष्य- विघ्न बाधाओं से बार-बार प्रताड़ित होने पर भी प्रारंभ किये हुए उत्तम कार्य को तब तक नहीं छोड़ते, जब तक कि वह पूर्ण न हो जाए। कार्य जितना श्रेष्ठ होगा बाधाएं भी उतनी ही बड़ी होंगी। आत्मबल जितना ऊँचा होगा तो फिर सारी समस्याए स्वतः उतनी ही नीची नज़र आने लगेंगी।

ध्यान रहे इस श्रृष्टि में श्रेष्ठ की प्राप्ति उसी को होगी जिसने सामना करना स्वीकार किया, मुकरना नहीं। अतः जीवन में उत्कर्ष के लिए संघर्ष जरुरी है।

नंद किशोर
उप प्रबन्धक (वित्त)

"सब कुछ निश्चित करना पड़ेगा"

बचपन से हम बच्चों को उच्च शिक्षा देने की सोचते हैं, उच्च ब्राण्ड के कपड़े पहनने की बात बताते हैं, ऊँची और उच्च स्तर की यात्राएं करना सिखाते हैं, ऊँचे ब्राण्ड के वाहन खरीदने और सैर करने की बातें बच्चों की रग–रग में भर देते हैं। ऊँचे सपने देखने की आदतें बच्चों की नस–नस में ही पाल देते हैं किंतु जीवन जीने की जीवन–शैली व कला को हम बहुत दूर से ही भूले जा रहे हैं।

आज आस–पास के वातावरण को देखने पर दर्शित हो रहा है कि हम अपने बच्चों को उच्च स्तर का भोजन करने तथा उच्च स्तर के मौलिक और मानवीय संस्कारों को सिखाने में हम बहुत पिछड़ गए है या यूं कहिए हम भूले ही जा रहे है जिसके परिणाम व्यक्ति, समाज, देश और विश्व के लिए भले साबित होने वाले नहीं हैं।

दौड़ना बंद करिए– हम दौड़ रहे हैं, दौड़े जा रहे हैं... भागे जा रहे हैं... जा कहाँ रहे है यह तो खुद भी पता नहीं होता है, बस दौड़े जा रहे हैं। जीवन–यापन के लिए आधारभूत दौड़ जरूरी है किंतु विश्राम ही अगली दौड़ के लिए ऊर्जा दे सकेगा यह कदापि नहीं भूलना चाहिए।

शरीर की बायोलोजिकल घड़ी को दुरूस्त रखिए–

प्रकृति ने चौबीस घंटे दिए है हमें रात–दिन का अच्छा गणित दिया है इस गणित और घड़ी को मत बिगाड़िए। शांति और आनन्द के साथ हर कार्य और उसके पल का आनन्द लेते हुए कार्य करना चाहिए और यह बात बच्चों को भी सिखाना चाहिए। असमय सोना, असमय खाना या असमय जागना किसी भी बिंदु से मन, शरीर व कर्म के लिए हितकारी नहीं है। हमारे शरीर की कार्य प्रणाली एक वैज्ञानिक सिस्टम से चलती है जिसके असंतुलन से हमारे शरीर की बायोलॉजिकल घड़ी बिगड़ जाती है और ढ़ेर सारे रोगों को हम अंजाने में ही आमंत्रण दे देते है और फिर कोसने लगते है किस्मत, भाग्य या ईश्वर को जबकि प्रकृति की सारी व्यवस्था को हम स्वयं ही दूषित किए जा रहे हैं।

काम ही पूजा है–यह सर्वश्रेष्ठ है किंतु सारे काम खुद ही करना या करते रहना कहीं न कहीं हानि होने के रास्ते खोल रहा होता है। क्षमता, सामर्थ्य व प्राथमिकता के आधार पर कार्य करने का प्रथमतः चुनाव किया जाना चाहिए जिससे दूषित भावनात्मक, मानसिक व व्यवहारिक प्रभाव मन तथा शरीर पर पड़ने से बचा जा सके। हमें बचपन में ही बच्चों को कार्यों के प्रति सजगता, सतर्कता व प्राथमिकता का मूल्यांकन व आंकलन किया जाना सिखा देना चाहिए। जब बड़े ऐसा करेंगे तो बच्चे खुद–ब–खुद देखते व करते हुए सीख जाएंगे। सबसे पहले हमें जागना होगा फिर दूसरों को जगाने की कोशिश करनी होगी।

परिवार व दोस्त भी जरूरी है–युवा और अधिक पढ़ा–लिखा वर्ग सोचता है कि हम ही सब कुछ है। पैसा है तो सब कुछ है आगे सब व्यवस्था पैसे से हो जाएगी। ऐसा सोचना बिल्कुल गलत है। जी हाँ! परिवार और दोस्त हैं, तो जीवन आनन्दित और कुशल मंगल

परिपूर्ण हो जाता है। भावनात्मक परस्परता बहुत जरूरी है ये ही वे सदस्य होते हैं जो सदैव सुख–दुःख के सहभागी बनते हैं। पड़ौसी भी बुरे नहीं होते है उनसे भी परिवार व दोस्ती जैसी अहमियत रख कर मन व शरीर को प्रफुल्लित रखा जा सकता है।

ना कहना सीखें–बहुत जरूरी है ना कहना भी क्योंकि घर हो या ऑफिस सबसे पहले काम भी उसे ही करने को कहा जाता है जहाँ से हाँ की उम्मीद होती है और यही उम्मीद एक ही व्यक्ति पर बार–बार लाद दी जाती है और व्यवहार के चलते यदि व्यक्ति हमेशा हाँ–हाँ करता और अपनी क्षमता से अधिक काम के बोझ के तले लद जाता है तो परिणाम विशेषतः काम करने वाले व्यक्ति के लिए तो अच्छे नहीं होते। कई मानसिक व भावनात्मक बीमारियां, चिड़चिड़ापन, गुस्सा व अवसाद आदि को स्वयं ही आमंत्रित कर लेते है इसके लिए बाद में किसी को दोष देने का कोई तुक नहीं। इससे अच्छा है अपनी क्षमता को पहचान कर कभी–कभी ना कहना भी बुरा नहीं, जिससे कार्यों को बांटा जा सकता है और सरलता व प्रसन्नतापूर्वक कार्यों को समयबद्ध एवं लक्ष्यबद्ध किया जा सकता है।

हम डिजिटल ही खा रहे हैं और डिजिटल ही पी रहे हैं–

हम ना तो खुद वर्तमान में जी रहे हैं और ना ही बच्चों को अच्छी संस्कृति व संस्कार सिखा रहे हैं। हम इतने अभद्र व असक्षम हो गए हैं कि बच्चों को यह भी नहीं सिखा पा रहे है कि क्या गलत है और क्या सही है। व्यस्ततम और भाग–दौड़ की जीवन–शैली में एक तो परिवार व दोस्तों को कुछ पल साथ

बैठने का समय नहीं, यदि किस्मत से समय मिल भी गया तो लगता है सभी साथ बैठकर भोजन नहीं कर रहे हैं बल्कि व्हाट्सएप, फेसबुक, चेटिंग या यू ट्यूब खा रहे हैं। मूर्खता इतनी है कि पढ़े–लिखे उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त माता–पिता भी अपने कुछ ही दिनों के नौनिहालों को नाना–नानी, दादा–दादी, चाचा–चाची, बहन–भाई के बजाए मोबाईल की रंगीनता से पहले परिचय कराते हैं जिसके दुष्परिणाम सामाजिक विघटन, मानसिक कलह, जटिल रोग, समय की बर्बादी, और अवनति के रूप में दिखाई दे रहे हैं।

सहयोग, सामंजस्य, सहानुभूति व समर्पण–

बच्चों को बचपन से मोबाईल व यूट्यूब पर डांस, कार्टून या नाच–गाने के बजाए इन सबसे दूर रख कर पारम्परिक खिलौने, कहानियां, संतुलित आहार, माता–पिता व घर के सदस्यों के साथ मनोरंजक खेल साथ में खेलने से बच्चे भी स्वयं सुरक्षित महसूस करते हैं और उनकी आंतरिक व मानसिक क्षमता सुदृढ़ होती है।

परिवार के सदस्य बहुत महत्त्वपूर्ण है–

जब भी साथ बैठे मोबाईल, फेस बुक या अन्य गेजेट्स से दूर रह कर आपसी संबंधों को

हंसी–खुशी मजबूत करें। कुछ समय अपनों के साथ बिताने से संबंध प्रगाढ़ होते हैं। जैसा हम सोचते है तथा जैसा अन्न हम खाते हैं वैसे ही रसों का स्राव हमारे शरीर में होता है। नकारात्मक व सकारात्मक रसों का निर्माण हम स्वयं अपने शरीर में कर पाते हैं लेकिन इस बात को हम दरकिनार कर अलग दुनिया में जीने लगते हैं जोकि अधिक समय तक स्थाई नहीं रह पाता है।

भविष्य में खुद व बच्चों को एकाकीपन व अकेलेपन से बचाने के लिए दौड़ना बंद करिए। सब कुछ निश्चित करिए। खाने का समय, सोने का समय, गैजेट्स के साथ का समय, बच्चों के साथ का समय, पढ़ने का समय, भोजन का समय, जागने का समय व अपने स्वयं के लिए समय....सब कुछ निश्चित करना पड़ेगा।

डॉ प्रकाश जैन
प्रबंधक–प्रशासन

महान वकील

एक सत्ता है वकील,
सजगता उसकी कमाई है।
अपडेट उसकी अनिवार्यता है,
आत्मविश्वास उसका हथियार है।।

सागर से गहरा राजदार है वकील,
कर्तव्यनिष्ठ, वफादार है वकील,
समय की मांग है वकील।
समाज का पथ प्रदर्शक है वकील,
चिंतक, सृजक, विश्लेषक है वकील।।

सरस्वती का पुंज है वकील,
सत्य का बोध है वकील।
आम आवाम की आवाज है वकील,
कानून के पालनार्थ है वकील।।

दुखियों के देवता है वकील,
सबसे बडा समाज सेवक है वकील।
आत्मविश्वास का अवतार है वकील,
समाज का रक्षक है वकील।।

हमें गर्व है वकीलों पर क्योंकि,
सम्मान की पूंजी है वकील,
समाज का गौरव है वकील
इसलिये महान है वकील।।

राजकुमार लवाडिया
प्रबन्धक – प्रशासन

"इंटरमिटेंट फास्टिंग व मास्क क्यों जरूरी है"

पूरे विश्व मण्डल पर कोरोना काल व इसके बाद अच्छी जीवन–शैली, संतुलित खान–पान अर्थात् आहार – विचार एवं आचरण बनाए रखने के लिए सभी ओर से पुरजोर प्रयास किया गया जिसमें चिकित्सकों व शोधकर्ताओं का भी भारी योगदान रहा है।

यदि बात करें जैन अनुयायियों व महापुरूषों की, जिनकी जीवन–शैली सदैव अनुशासित रही है जिसमें मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग, इम्यूनिटी बढ़ाने वाला भोजन, क्वारेंटाईन एवं स्वच्छता जैसी शैली शामिल रही है।

वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गनाईजेशन के मुताबिक यदि कोरोना काल में मास्क का प्रयोग नहीं किया जाता तो लाखों की संख्या में हुई मौतों का आंकड़ा तीन गुना अधिक तक हो सकता था। जैन धर्म में भगवान महावीर के सिद्धांतों के अनुरूप मास्क का प्रयोग पूर्व से वर्षों से कर रहे हैं जिसका मुख्य उद्वेश्य है अहिंसा का पालन करना। वायु सजीव है जिसकी हिंसा से बचने के लिए जैन धर्म मुख पत्ती अर्थात् मास्क का प्रयोग बताता है। मुख पत्ति के प्रयोग से बोलते समय सामने बैठे व्यक्ति या सामने रखे ग्रंथ पर थूक नहीं उछलें जिससे शिष्टाचार बना रहता है।

पद्मश्री एवं पद्म भूषण अवार्ड से सम्मानित कार्डियो वैस्कुलर सर्जन डॉ नरेश त्रेहन ने 11वें आचार्य महाश्रमण जी से कुछ सवाल करके जवाब प्राप्त किए और माना कि जैन धर्म में भी विचार वैसा ही है कि थूक के ड्रापलेट्स अन्य दूसरे व्यक्ति तक नहीं पहुंचें क्योंकि बोलने, खांसने या छींकने से ड्रापलेट्स के साथ कीटाणु 3 मीटर तक जाते हैं जिससे इतनी दूरी पर खड़ा व्यक्ति भी बीमार हो सकता है इसी कारण मेडीकल साईंस ने भी मास्क को उपयोगी बताया है। महाश्रमण जी ने यह भी बताया कि मास्क के प्रयोग से मित भाषण अर्थात् कम बोलने और विवेकपूर्ण भाषण देने की भी प्रेरणा देता है जिससे व्यक्ति सोच समझकर और कम बोलता है परिणामतः विवेक बढ़ता है। डॉ त्रेहान ने भी सहमति जताई कि सामाजिक विज्ञान भी हमें ज्यादा सुनने व कम बोलने की शिक्षा देता है।

जैन धर्म में भी कई तरह के व्रत और उपवास पद्वति का सख्ती से पालन किया जाता है। आज कोविड के बाद नई जीवन–शैली पद्वति और इंटरमिटेंट फास्टिंग का चलन अर्थात् 12–14 घंटे के अंतराल वाला डाईट प्लान का प्रचलन बढ़ा है साथ ही डाईटिंग, गर्म पानी, इम्युनिटी बढ़ाने वाला आहार–विहार को प्राथमिकता दी जा रही है। जैन धर्म के अनुयायी तो सूर्यास्त के बाद भोजन ग्रहण ही नहीं करते हैं।

आजकल इंटरमिटेंट फास्टिंग का चलन बढ़ चला है जिसमें 14 से 16 घंटे के लिए ब्रेक की बात कही जाती है। यह बिल्कुल सही है डिटॉक्स यानी शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालना। डिटॉक्स से शारीरिक रूप से तो फायदा होता ही है साथ ही मानसिक रूप से भी मजबूती आती है क्योंकि इसके लिए विशेष तरह का खान–पान, जीवन–शैली, उपवास, व्रत व सोच का पालन किया जाता है।

महावीर विचार–सुख हो या दुःख हो, हमें हर स्थिति में सभी प्राणियों को वैसा ही समझना चाहिए जैस हम स्वयं को मानते हैं।

अरूण शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक–राजभाषा

"कुछ रह तो नहीं गया"

तीन महीने के बच्चे को
दाई के पास रखकर
जॉब पर जाने वाली माँ को
दाई ने पूछा ~
कुछ रह तो नहीं गया ?
पर्स, चाबी सब ले लिया ना ?
अब वो कैसे हाँ कहे ?

पैसे के पीछे भागते-भागते
सब कुछ पाने की ख्वाहिश में
वो जिसके लिये सब कुछ कर रही है,
वही रह गया है !

शादी में दुल्हन को विदा करते ही
शादी का हॉल खाली करते हुए
दुल्हन की बुआ ने पूछा ~
भैया, कुछ रह तो नहीं गया ना ?
चेक करो ठीक से ..!

बाप चेक करने गया, तो
दुल्हन के रूम में
कुछ फूल सूखे पड़े थे.
सब कुछ तो पीछे रह गया.
21 साल जो नाम लेकर
जिसको आवाज देता था, लाड़ से,
वो नाम पीछे रह गया, और
उस नाम के आगे गर्व से
जो नाम लगाता था,
वो नाम भी पीछे रह गया अब.

भैया, देखा ?
कुछ पीछे रह तो नहीं गया ?
बुआ के इस सवाल पर
आँखों में आये आँसू छुपाता बाप
जुबाँ से तो नहीं बोला, पर दिल में
एक ही आवाज थी ~
सब कुछ तो यहीं रह गया .!

बड़ी तमन्नाओं के साथ बेटे को
पढ़ाई के लिए विदेश भेजा था,
और वह पढ़कर वहीं सैटल हो गया.

पौत्र जन्म पर बमुश्किल
3 माह का वीजा मिला था,
और चलते वक्त बेटे ने प्रश्न किया ~
सब कुछ चेक कर लिया ना ?
कुछ रह तो नहीं गया ?
क्या जबाब देते, कि अब
अब छूटने को बचा ही क्या है ..!

सेवानिवृत्ति की शाम
पी.ए. ने याद दिलाया ~
चेक कर लें सर ..!
कुछ रह तो नहीं गया ?

थोड़ा रूका, और सोचा कि
पूरी जिन्दगी तो
यहीं आने-जाने में बीत गई.
अब और क्या रह गया होगा ?

श्मशान से लौटते वक्त बेटे ने ...
फिर से गर्दन घुमाई,
एक बार पीछे देखने के लिए ...
पिता की चिता की
सुलगती आग देखकर
मन भर आया.
भागते हुए गया

पिता के चेहरे की
झलक तलाशने की
असफल कोशिश की ....
और वापिस लौट आया.
दोस्त ने पूछा ~
कुछ रह गया था क्या ?

भरी आँखों से बोला ~
नहीं , कुछ भी नहीं रहा अब.
और जो कुछ भी रह गया है,
वह सदा मेरे साथ रहेगा .!

एक बार ... समय निकालकर सोचें,
शायद ... पुराना समय याद आ जाए,

आँखें भर आएं, और
आज को जी भर जीने का
!!.. मकसद मिल जाए ..!!

यारों ! क्या पता ?
कब इस जीवन की शाम हो जाये.

इससे पहले कि ऐसा हो
सब को गले लगा लो,
दो प्यार भरी बातें कर लो.
ताकि ... कुछ छूट न जाये ..!!!

नंद किशोर
उप प्रबन्धक (वित्त)

तोल मोल के बोल

कहाँ पर बोलना है, और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना है, वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

कटा जब शीश सैनिक का, तो हम खामोश रहते हैं।
कटा एक सीन पिक्चर का, तो सारे बोल जाते हैं।।

नयी नस्लों के ये बच्चे, जमाने भर की सुनते हैं।
मगर माँ बाप कुछ बोले, तो बच्चे बोल जाते हैं।।

बहुत ऊँची दुकानों में, कटाते जेब सब अपनी।
मगर मज़दूर माँगेगा, तो सिक्के बोल जाते हैं।।

अगर मखमल करे गलती, तो कोई कुछ नहीं कहता।
फटी चादर की गलती हो, तो सारे बोल जाते हैं।।

हवाओं की तबाही को, सभी चुपचाप सहते हैं।
चरागों से हुई गलती, तो सारे बोल जाते हैं।।

बनाते फिरते हैं रिश्ते, जमाने भर से अक्सर हम
मगर घर में जरूरत हो, तो रिश्ते भूल जाते हैं।।

कहाँ पर बोलना है, और कहाँ पर बोल जाते हैं
जहाँ खामोश रहना है, वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

बार बार पढ़े। आपको हर बार एक नया अहसास होगा।

रीना माथुर
पत्नी श्री सुधीर कुमार भटनागर
क्षेत्रीय प्रमुख

राह में मुश्किल होगी

राह में मुश्किल होगी हजार, तुम दो कदम बढाओ तो सही।
हो जायेगा हर सपना साकार, तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।

मुश्किल है पर इतना नहीं, कि तू कर ना सके।
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं कि तू ना कर सके
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।

एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा, तुम्हारा भी सत्कार होगा।
तुम कुछ लिखो तो सही, तुम कुछ आगे पढो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।

सपनों के सागर मे कब तक गोते लगाते रहोगें,
तुम एक राह चुनो तो सही।
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।

कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे,
जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे।
गिरते पडते संभल जाओगे, फिर एक बार तुम जीत जाओगे
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।

मनीष कुमार
उप प्रबन्धक (सचि.)

"अपने डॉक्टर स्वयं बने!"

अपने डॉक्टर स्वयं बने से मेरा यह अभिप्राय कतई नहीं है कि एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपथिक दवाएं आप अपने आप लें। दवा कोई भी हो, उसमें रसायन होता है, जो

गंभीर, सामान्य रिएक्शन कर सकता है। यदि दवाई लेना ही पड़े तो बगैर डॉक्टर, वैद्य की सलाह के न लें। अपने डॉक्टर स्वयं बनने से मेरा अभिप्राय है, अपने शरीर की प्रकृति के अनुरूप प्राकृतिक चिकित्सा जो प्रकृति ने हमारे लिए अनेक रूपों में प्रदत्त की है अपनाएं व अपने आप को स्वस्थ रखें। हमारा शरीर स्व संचालित प्रणाली पर आधारित है, उसमें जब भी कोई रोग अता है, कुछ समय ठहर कर अपने आप चला जाता है। हमारा शरीर उस तकलीफ को खुद ब खुद ठीक करने का प्रयास करता है। फिर भी यदि कोई व्याधि परजीवी प्रवेश कर जाये तो अपनी प्रकृति के अनुसार प्राकृतिक उपायों से उसे दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए, अपितु दवाइयाँ खाने के। दवाओं के विपरीत परिणाम देखने को मिलते हैं। आइये देखते हैं, कि वे कौन से प्राकृतिक उपाय हैं, जो हमारे शरीर को रोग मुक्त कर सकते हैं।

पानी

हमें अपने शरीर की मांग के अनुरूप पानी जरूर पीना चाहिए जो उससे कम भी न हो और ज्यादा भी न हो। कम पानी पीने से शरीर में पानी की कमी हो जाएगी और अधिक पानी पीने से शरीर के अनेकों आवश्यक तत्व मूत्र मार्ग से बाहर निकल जायेंगे यथा स्वच्छ, साफ, कुएं या नल का पानी पीने को उपयोग में लाएं। आजकल आरओ वाटर का फैशन है, जिसमे पानी

के प्राकृतिक खनिज बाहर कर दिए जाते हैं, जो शरीर के रोगों का कारण बन सकते हैं। यथा सम्भव प्रातः जागने के बाद एक या दो गिलास गुनगुना पानी पियें कम से कम घंटे बाद पानी पिये। खट्टी चीजों व फलों के खाने के बाद पानी पीने से बचें। अधिक धूप से आने के बाद पानी न पीयें।

भोजन

भोजन में स्वास्थ्यकर, सुपाच्य, ताजे पदार्थों को शामिल करें। बासी, अधिक तला भुना, बाजार का भोजन करने से बचें। आजकल पैक्ड डिब्बाबंद पदार्थों के सेवन का फैशन जो स्वास्थ्य के लिए

हानिकर हो सकते हैं, उनसे बचें। इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए, कि जहाँ तक हो सके दिन में कई बार (थोडा थोडा) भोजन करें, नाश्ता प्रातः जरूर करें, दोपहर का भोजन अच्छे से करें और शाम को भोजन हल्का और सोने से 2 घंटे पूर्व ले लें, भोजन में हरी सब्जियों व मौसमी फलों को प्राथमिकता दें।

व्यायाम

शरीर के लिए उतना ही आवश्यक है जितना भोजन और पानी। पर इसे योग प्रशिक्षक के सानिध्य में ही किया जाना चाहिए। व्यायाम हमारे खान पान को हजम होने में शरीर रूपी मशीन को सुसंचालित करने में अहम् भूमिका का निर्वाह करता है। किन्तु आज लोग इससे दूर होते जा रहे हैं। आज के युवा व वृद्धजन आराम पसंद, गाड़ी के आदी हो गए हैं। वे पैदल चलना, शरीर को कष्ट देना पसंद नहीं करते हैं। फलस्वरूप बीमारियों का घर बन जाते हैं।

यदि स्वस्थ रहना है तो व्यायाम जरूर करें। व्यायाम नहीं कर सकते हो तो सुबह शाम भ्रमण अवश्य करें। दिन भर में कम से कम 30–40 मिनिट की पदयात्रा जरूर करें। शाम के भोजन के आधे घंटे उपरांत भी 15 मिनिट कम से कम पैदल चलें। यह निर्विवाद व्यायाम है जो शरीर के समस्त अंगों को स्फूर्ति प्रदान करता है। यदि कम वजन करना है तो तेज चाल से चलें। यह आपके श्वास को बल देता है।

हरी साग सब्जियां

मौसमी हरी साग सब्जियों का सेवन जो हर रंग की हों, भरपूर मात्रा में किया जाना चाहिए। सब्जी के अतिरिक्त हरी सब्जियां जैसे पालक, मेथी, लौकी, चुकंदर, टमाटर अदि सूप के लिए भी प्रसिद्ध हैं, इनका सूप सप्ताह में दो तीन बार अवश्य सेवन करना चाहिए। कई सब्जियों कुछ विशेष अंगों के लिए बहुत लाभदायक होती हैं जैसे गाजर, नेत्ररोगों के लिए पालक, चुकंदर रक्त की कमी व लौह तत्व बढाने के लिए लाभदायक होती है। सब्जियों का सेवन कम तेल व कम मसालों के साथ किया जाना चाहिए। लहसुन, प्याज, अदरक का उपयोग आवश्यकतानुरूप समय समय पर करते रहना चाहिए, जो स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

मौसमी फल

मौसमी फल स्वास्थ्य रक्षा में अहम् भूमिका का निर्वाह करते हैं। कहावत है कि एक सेब नित्य खाओ, डॉक्टर दूर भगाओ। सेब, अनार, अंगूर, तरबूज, खीर ककड़ी, पपीते, केले आदि ऐसे फल हैं जो वर्तमान में बारह महीने उपलब्ध हो जाते हैं इनसे परहेज न करें, ये आपकी इम्युनिटी बढाने एवं शरीर को मजबूती प्रदान करने में सहायक हैं। ये कृत्रिम इम्युनिटी बूस्टर, प्रोटीन, विटामिन से कहीं बेहतर होते हैं।

प्रसन्नता का भाव

स्वस्थ रहना है तो सदैव खुश मिजाज रहें। दुःख तकलीफ आती है तो क्षणिक होती है, उससे न घबराए खुद भी प्रसन्न रहें और औरों को भी खुश रहने में सहयोग करें। जो बांटोगे वही मिलेगा। **''जो बोओगे वही काटोगे''** की तर्ज पर खुशी निशुल्क मिलती है जिसे बेहिसाब रूप से बांटा जा सकता है, यदि मन का सही सुकून चाहिए तो औरों को खुश जरूर रखें। यह स्वस्थ रहने की अनमोल कुंजी है।

भारतीय रसोई के मसालों का दवाई के रूप में उपयोग

हर भारतीय के घर की रसोई एक छोटा मोटा दवाखाना होती हैं। जिसमे अनेकों प्रकार के मसाले, दाल, दलहन शामिल होते हैं, ये मसाले अपने आप में दवाई होते हैं जिनके दैनिक उपयोग से अनेकों रोगों का शमन किया जा सकता हैं, हल्दी को ही लीजिये इसमे इम्युनिटी बढ़ने की क्षमता, खून पतला करने की क्षमता, कफ व श्वसन तंत्र को संचालित करने की भरपूर क्षमता होती है। इसका सेवन किसी भी रूप में किया जा सकता है, ऐसे ही धनिया, जीरा, सौंफ, कालीमिर्च, हींग, सौंठ राई, दालचीनी, कलौंजी, अजवायन आदि भी अपने आपमें अनेकों रोगों के संहारक होते हैं जिनका उपयोग कर छोटी मोटी बीमारियों से मुक्ति पा सकते हैं।

ध्यान

ध्यान के माध्यम से मन को एकाग्र किया जा सकता है जो दुविधाओं और परेशानियों से निजात दिला सकता है। परेशानी विपदाएं नहीं होंगी तो हम स्वस्थ रह सकते हैं। मानसिक शांति ध्यान से ही प्राप्त होती है। प्रकृति ने हमें स्वस्थ रहनें के लिए अनेकों उपहार दिए हैं जिनके आगे आधुनिक दवाइयाँ कहीं नहीं लगती फिर भी यदि लाइलाज रोग हो जाए तो डॉक्टर की सलाह लेना व उनके निर्देशों का पालन करना मत भूलिए।

ईश्वर पर भरोसा

विपदाएं, रोग, समस्यायें क्षण भंगुर होती है। ईश्वर पर भरोसा रखे सभी का समाधान सहज संभव है, उसके यहाँ देर है अंधेर नहीं।

अनिल कुमार खण्डेलवाल
प्रबन्धक – वित्त

कोरोना के बाद शिक्षा का स्तर

शिक्षा जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। शिक्षा एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ–सीखना या सिखाना होता है। शिक्षा हम किसी भी माध्यम के द्वारा ग्रहण कर सकते हैं। शिक्षा हम सभी को बौद्धिक रूप से तैयार करती है।

भयावह कोरोना महामारी के बाद शिक्षा पर बहुत गंभीर प्रभाव पड़ा जिसमें सारे स्कूल, कालेज व शैक्षिक संस्थान सब बंद हो गए थे। सभी को समय पर शिक्षा मिलती रहें इसके लिए ऑन लाईन कक्षाएं चालू की गई।

ऑन लाईन शिक्षा से घर पर या जो जहाँ है वहीं पर रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकता है क्योंकि मोबाईल और इंटरनेट की आसानी से अब हर कोई आसानी से शिक्षा ग्रहण सकता है। ऑन लाईन पढ़ाई से यातायात व अन्य फालतू खर्चो का बचाव हुआ है क्योंकि जब घर पर ही पढ़ाई हो रही है तो बस या ऑटो का खर्चा भी बचता है साथ ही आने–जाने का समय भी बचता है।

कोरोना के बाद पूरी दुनिया में प्रतियोगिता का स्तर बहुत बढ़ गया है। चारों ओर प्रतियोगी बढ़ गए है। सभी बच्चे यह चाहते हैं कि वह सबसे पहले नंबर पर आए इसी कोशिश व सोच के साथ बच्चे अपना अच्छा सा अच्छा करने की सोचने लगे हैं।

कोरोना के बाद शिक्षा का चहुँमुखी विस्तार हुआ है नई तकनीकें व श्रेणियों का प्रयोग होने लेगा है जिससे लगता है पीछे नहीं रहे है बल्कि आगे बढ़ने लगे हैं।

अनुश्री जैन

"कार्यालय में दिनांक 8 मार्च 2022 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन"

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको), जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 8 मार्च 2022 को **"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस"** के उपलक्ष्य में अपने परिसर में महिला कार्मिकों के सम्मान हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती मुनेश गुर्जर, महापौर, जयपुर नगर निगम हेरिटेज मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित रही।

महापौर, जयपुर नगर निगम हेरिटेज द्वारा उपस्थित महिला / पुरूष प्रतिनिधियों को **अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस** की महत्वता तथा वर्तमान में भारत के विकास में महिलाओं के योगदान पर अपने विचार व्यक्त किये गये।

"मुझे जाने दो ...."

अगर पत्नी है तो दुनिया में सब कुछ है। राजा की तरह जीने और आज दुनिया में अपना सिर उंचा रखने के लिए अपनी पत्नी का शुक्रिया। मेरा फूला–फला परिवार सब पत्नी की मेहरबानी है। मेरी सुविधा–असुविधा, मेरे बिना कारण के क्रोध को संभालना। मेरे सुख से सुखी और मेरे दुःख से दुःखी हो जाना। अरे, जिस समाज में सिर उंचा करके, सीना तानकर चलते हैं वह सब उसी की वजह से है, नही तो समाज में कोई पूछेगा ही नही। जरा कल्पना करके देखें:

एक दिन पत्नी की अचानक तबियत खराब हुई और वह रात में गुजर गई, सब तरफ सन्नाटा छा गया। घर में रोने धोने की आवाजें आ रही थी। उस वक्त पत्नी की आत्मा जाते जाते मुझसे मानो ऐसा कह रही हो :–

मुझे जाने दो...आपके आंगन में अपना शरीर छोड कर जा रही हूँ, आप अकेले पड जाएंगे। बहुत दर्द हो रहा है मुझे, लेकिन मैं मजबूर हूँ, अब मेरा वक्त आ गया है। मेरा मन नही मान रहा है, पर मैं अब कुछ नहीं कर सकती । मुझे जाने दो।

मुझे जाने दो... अभी बेटी ससुराल से आएगी और मेरा मृत शरीर देखकर बहुत रोएगी, बेहोश हो जायेगी। तब उसे संभालना और उसे शांत कर देना, बस इतनी हिम्मत रखना।

मुझे जाने दो... जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। जो भी इस दुनिया में आया है, वो यहां से जरूर जायेगा। यह प्रकृति का नियम है। मुझे धीरे–धीरे भूल जाना, मुझे बहुत याद मत करना और जीवन के इस चक्रव्यूह में फिर से डूब जाना, मेरे बिना जीवन जीने की आदत डाल लेना।

मुझे जाने दो... आपको BP, Sugar है, गलती से मीठा मत खा लेना। सुबह शाम की दवा समय पर खा लेना। अगर चाय में देरी हो जाये तो गुस्सा मत करना, मैं अब नहीं हूँ, यह समझ कर जीना सीख लेना। मेरा रूमाल, मेरी चाबी कहां है जगह पर रखना सीख लेना।

मुझे जाने दो... कभी गुस्सा नही करना, हमेशा मुस्कराते रहना, कभी उदास नहीं होना, अपने दोस्तों के साथ वक्त बिता लेना, लेकिन कभी कमजोर मत होना।

मुझे जाने दो... शादी के बाद हम बहुत प्यार व लडाई से रहे। आप बगीचे को मेरी जगह बना लेना और प्यार से निहार लेना। उठो सुबह हो गई है, अब कोई ऐसा नहीं कहेगा। अपने आप सुबह उठने की आदत डाल लेना। भगवान की भक्ति और पूजा सामयिक स्वाध्याय करना कभी मत भूलना।

मुझे जाने दोः	**मुझे जाने दोः**	**मुझे जाने दोः**	**मुझे जाने दोः**

रेखा सिंघवी
पत्नी शैलेन्द्र सिंघवी
सहायक प्रबन्धक– वित्त

"हर आपदा के समाधान के 8 सिद्धांत"

भगवान महावीर के अमूल्य, अजर और अमर विचारों में शांति, स्वस्थ और सम्पूर्ण जीवन का

सुख का महामंत्र छिपा है। महान् संतों, चिकित्सकों व महापुरूषों ने भी स्वीकार किया है कि हजारों वर्षों के इतिहास में यदि झांक कर देखते है तो ज्ञात होता है कि इंसान पर आने वाली हर आपदा या महामारी का सामना करने और उसका सार्थक समाधान अथवा हल भगवान महावीर की शिक्षा व सिद्धांतों में मौजूद है।
तप, त्याग, संयम, अहिंसा और एकांतवास जैसे मूल्यों से जीवन सार्थक, सुदर और सुखी बन जाता है।

प्रथम सिद्धांत–

मुंह पत्ति–मुंह पत्ति संक्रमण रोकने के लिए मास्क होता है। महावीर भगवान से सभी के लिए मुख पर पट्टी रखने का सिद्धांत दिया था। इसका कारण यह था कि जब भी हम बोलते हैं या बात करते हैं तब हवा तथा पर्यावरण में मौजूद जीवाणु और विषाणु मुंह के द्वारा और श्वास के द्वारा शरीर में पहुँचकर किसी भी प्रकार के संक्रमण का कारण नहीं बनें। कोरोना काल में यही मुख पत्ती अर्थात मास्क कोरोना से लड़ने में पूरे विश्व में सबसे बड़ा हथियार रहा है।

द्वितीय सिद्धांत–

सम्यक एकांत–सम्यक एकांत आईसोलेशन का समरूप है। जैन साधु और मुनि तमाम बुराईयों से बचने के लिए सम्यक एकांत का सहारा लेते है जिससे उनमें दुनियादारी के किसी भी प्रकार के विकार, ईर्ष्या, भय, लालच, द्वेष, क्रोध या अन्य दूषित विचार नहीं आ सकें। आज सम्यक एकांत का आधुनिक व नवीन स्वरूप आईसोलेशन नाम के उभर कर आया है। कोरोना काल में महामारी से लड़ने और इसके वायरस के विकारों से बचने के लिए समूचे विश्व ने यह प्रयोग किया है।

तृतीय सिद्धांत–

सावरणी–सावरण स्वच्छता का प्रतीक है जोकि सभी के लिए सर्वोपरि है। व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता का सबसे बड़ा और सीधा संबंध स्वच्छता से भी है। जैन धर्म में वर्षों से मुलायम स्पर्श वाली सावरणी अर्थात् झाड़ू अर्थात झाड़नी का प्रयोग किया जाता रहा है। आज भी स्वच्छ और सेहत पूर्ण जिंदगी जीने के लिए घरों में इसका प्रयोग किया जाता है क्योंकि घर एवं रहने के स्थान पर कचरे में मौजूद किटाणुओं और विषाणुओं को घर के बाहर निकालने के लिए सावरणी का हमारे लिए बहुत अहम् स्थान है।

चतुर्थ सिद्धांत–

शाकाहार–शाकाहार से तात्पर्य सात्विक भोजन से है। जैन धर्म में भगवान महावीर के सिद्धांतों में शाकाहार के साथ अहिंसा का पालन भी आवश्यक है जिससे अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। चीन के वुहान से कोरोना का फैलाव हुआ और वह भी सी–फूड्स के माध्यम से फैला है यह हम सभी अलग–अलग प्रकाशित खबरों में पढ़ चुके हैं। यह तो तय है कि रोगों की उत्पत्ति में मांसाहार भी एक मुख्य कारण बन सकता है जिससे स्पष्ट है कि शाकाहार अच्छे स्वास्थ्य के लिए एक उत्तम आहार है।

पंचम सिद्धांत–

संघट्टा–संघट्टा अर्थात् सोशल डिस्टेन्सिंग है। कोरोना महामारी से बचाव के लिए विश्व के लगभग सभी देशों ने कोरोना संक्रमण से बचाव व वायरस के प्रसार को रोकने के लिए

लोगों को एक–दूसरे से सम्पर्क में आने से रोकने के लिए सोशल डिस्टेन्सिंग अथवा संघट्टा की पालना के लिए कठोर नियम लागू किए थे। हजारों वर्ष पहले ही भगवान महावीर ने विजातीय के स्पर्श से बचने के लिए इस सिद्धांत को लागू कर दिया था जोकि सामान्यतः रोग से बचाव में भी हमेशा बहुत सार्थक रहा है।

षष्ठम सिद्धांत–

अलगाव–अलगाव जोकि क्वारंटाईन का ही बहुत पुराना रूप है। ध्यान मन और शरीर दोनों को पूरी तरह स्वस्थ रखता है। जैन धर्म के सिद्धांत में ध्यान लगाने के लिए वर्षों से अलगाव के साथ रहने के लिए कहता है। आज भी जब हम ध्यान का अभ्यास करते है तो लोगों से कुछ समय के लिए अलगाव कर लेते है जिससे किसी भी प्रकार का वैचारिक या भौतिक विकार से दूर रहा जा सकता है साथ ही विशेष परिस्थिति में किसी प्रकार के संक्रमण की आशंका कम करता है। अलगाव अर्थात् दूरी का सिद्धांत जिसे समग्र विश्व को क्वारेन्टाईन के नाम से अपनाया है।

सप्तम सिद्धांत–

जल का अल्प प्रयोग–जल बहुत अमूल्य निधि है। महावीर भगवान ने आचरांग सूत्र में पानी का कम से कम प्रयोग करने हेतु उपदेश दिया था जिससे पूरी तरह स्पष्ट होता है कि हजारों साल पहले ही पानी के मूल्य एवं स्थिति का बोध था। जहां नमी और दूषित जल होता है वहां जीव–जंतुओं की उत्पत्ति अधिक होती है जोकि कई रोगों का कारण भी बनते है। इस सिद्धांत में पानी का प्रयोग आवश्यकतानुसार एवं कम से कम करने को कहा गया है जोकि रोग मुक्त रखने में बहुत कारगर है।

अष्ठम सिद्धांत–

गलना–गलना मतलब पानी को छानकर पीना। जैन धर्म का कठोर संदेश है कि पानी को छानकर ही पीना चाहिए। नियमित रूप से पीने वाले पानी को दो–तीन तह करके मोटे कपड़े से छानकर ही पीना चाहिए। रोज इसी प्रकार पानी पीने से पानी में मौजूद कचरा, बारीक मिट्टी, रोग पैदा करने वाले किटाणुओं व जिवाणुओं को शरीर में जाने से रोका जा सकता है। कोरोना काल में पीने के पानी को स्वच्छ करके पीना चाहिए इसकी महत्ता भी हम सभी जानी है।

जी हाँ! यह 8 सिद्धांत वास्तव में हमारे जीवन के इर्द–गिर्द कहीं न कहीं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं और समूचे मानव जाति को निर्भय, स्वस्थ, आध्यात्मिक तथा अहिंसक जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

डॉ प्रकाश जैन
प्रबंधक–प्रशासन

कोरोना के बाद शिक्षा का स्तर

कोरोना के बाद माध्यमिक हो या उच्च शिक्षा विद्यार्थियों का पठन–पाठन बुरी तरह से प्रभावित है।
ऑन लाईन शिक्षा प्रणाली का इस्तेमाल कर

छात्र–छात्राओं को शिक्षा प्राप्ति में सहयोग करने की पूरी कोशिश की जा रही है। कोरोना के बाद ऑन लाईन शिक्षा बच्चों को अच्छा मार्ग–दर्शन दे रही है।

शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए भारत सरकार तथा सभी राज्यों की सरकारों ने भी इस दिशा में कई कदम उठाए है। घर पर ही शिक्षा मिलने पैसे और समय की भी बहुत बचत हो रही है। सरकार बच्चों को ई–कंटेंट मुहैया करा रही है। यूजीसी एवं अन्य क्षेत्रीय बोर्ड कई सारे एप्स और वेबसाईट पर कई प्रकार के कोर्सेस और नोट्स और अन्य मेटेरियल मुफ्त में दे रही है जिसका लाभ सभी वर्गों के बच्चों को हो रहा है।

शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ रही है और हर गांव में शिक्षा का आगाज हो रहा है। आज उच्च से उच्च शिक्षा भी घर बैठे ही आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

अमृत जैन

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) एवं निदेशक (वित्त) का जयपुर दौरा

संस्थाओं के अधिकारियों के साथ ऋण समझौता

योग दिवस (21 जून 2021)

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय समाचारों में

हुडको ने शहरी कार्य मंत्री को अंतिम लाभांश के रूप में 174.23 करोड़ रुपये का चेक सौंपा

(विशेष संवाददाता)

नई दिल्ली । हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (हुडको) ने वित्तीय वर्ष 202021 के लिए अपने शेयरधारकों को कुल 435.41 करोड़ रुपये का लाभांश दिया है। कंपनी ने आज आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के हिस्से के रूप में आवासनऔर शहरी कार्य मंत्री हरदीप सिंह पुरी को अंतिम लाभांश के रूप में 174.23 करोड़ रुपये का एक चेक सौंपा। आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय 61.08 फीसदी शेयर के साथ हुडको का सबसे बड़ा शेयरधारक है। वहीं, ग्रामीण विकास

हिस्सा है, जबकि 18.19 फीसदी पब्लिक होल्डिंग है।

कंपनी ने वित्तीय वर्ष 201920 के 2174.53 करोड़ रुपये की ... 202021 में 2268.64 करोड़ रुपये का सकल लाभ कमाया है। हुडको ने अपने शेयरधारकों को कुल 21.25 फीसदी लाभांश देने की घोषणा की थी। इससे पहले कंपनी ने 7.5 फीसदी की दर से 103.71 करोड़ रुपये के अंतरिम लाभांश का भुगतान किया था।अंतरिम लाभांश के समय आवासनऔर शहरी कार्य मंत्रालय की शेयरधारिता 69.08 फीसदी थी। इसे विनिवेश के बाद घटाकर 61.08 फीसदी कर दिया गया। इसने खर्च नहीं की गई सीएसआर निधि की रकम 50 करोड़ रुपये का भुगतान भी सरकारी खाते में किया है। बता दें कि हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (हुडको) एक सूचीबद्ध मिनीरत्न सीपीएसई और आवासन व शहरी अवसंरचना में भारत का अग्रणी तकनीकीवित्तीय पीएसयू है।

हुडको ने दी लोन की मंजूरी, अब राज्य सरकार की हां का इंतजार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. आर्थिक तंगी से जूझ रहे राजधानी के दोनों नगर निगमों को हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हुडको) से लोन की स्वीकृति मिल गई है। अब राज्य सरकार की हां का इंतजार है। निगम अधिकारियों की मानें तो राज्य सरकार गारंटी देगी और उसके बाद दोनों निगमों को हुडको से लोन मिल जाएगा। हालांकि, इससे पहले लोन लेने को लेकर वित्त विभाग के सवालों के जवाब भी दोनों शहरी सरकार के अधिकारियों को तलाशने होंगे। वित्त विभाग ने पूछा है कि निगम इन लोन को कैसे चुकाएगा और गारंटी कौन देगा?

गुरुवार को ग्रेटर नगर निगम के लिए 365 करोड़ रुपए और हैरिटेज के लिए 200 करोड़ रुपए लोन की स्वीकृति हुडको की ओर से दे दी गई। हुडको के रीजनल हैड सुधीर भटनागर ने दोनों निगम मुख्यालय में जाकर स्वीकृति पत्र भी सौंप दिए। उन्होंने बताया कि पहले दो वर्ष तक लोन की कोई किश्त नहीं देनी होगी। सिर्फ ब्याज ही देना होगा।

इनमें होगा बजट खर्च: सभी तरह के निर्माण कार्य, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट को अपडेट करने के अलावा सड़क निर्माण, फुटपाथ को बनाने से लेकर उनका सौंदर्यीकरण, मोक्षधाम का रखरखाव, पार्कों का सौंदर्यीकरण इलेक्ट्रिफिकेशन वर्क के काम होंगे।

चुकाएंगे देनदारियां: हुडको से लोन की स्वीकृति मिलने के साथ ही दोनों निगमों की महापौर ने खुशी जाहिर की है। मौजूदा स्थिति की बात करें तो निगमों की आर्थिक स्थिति खराब है। जो लोन मिलेगा उससे देनदारियां चुकाई जाएंगी और बंद पड़े काम फिर से शुरू किए जाएंगे।

देनदारियां चुकाएंगे

लोन के लिए हुडको से स्वीकृति दी है। पहली किश्त के रूप में 100 करोड़ रुपए लेंगे। अभी वित्त विभाग के सवालों के जवाब देने हैं। 250 करोड़ रुपए की देनदारियां बकाया है। जो पैसा लोन के रूप में मिलेगा उसको निगम के संसाधनों से चुकाया जाएगा।

सौम्या गुर्जर, महापौर, ग्रेटर

जो लोन मिलेगा उससे विकास कार्य को गति मिलेगी। आवश्यकता के अनुसार लोन लिया जाएगा। अभी निगम को 200 करोड़ की ही जरूरत है। आगे जब जरूरत पड़ेगी तो लोन के लिए फिर से आवेदन करेंगे।

मुनेश गुर्जर, महापौर, हैरिटेज

HUDCO sanctioned ₹4,760 cr, released ₹4,155 cr for Rajasthan

First India Bureau

Jaipur: Housing & Urban Development Corporation Ltd. (HUDCO), a premier Techno Financing Institution under the Ministry of Housing & Urban Affairs, GoI is actively engaged in providing financial assistance for Housing & Infrastructure Development in Rajasthan. In continuation to above, HUDCO has sanctioned Rs. 4,760 cr & released Rs. 4,155 cr during the financial year 2021-22 in Rajasthan. Sudhir Kumar Bhatnagar, Regional Chief, HUDCO Jaipur briefed that HUDCO has sanctioned Rs. 4000 crore in Jal Jeevan Mission, Rs. 600 crore for Smart City & AMRUT Scheme & Rs. 160 crore for three schemes of Affordable Housing & CM Jan Awas Yojana during last financial year. Besides that, Rs. 105 cr were also released to various Municipal Corporations & Rs. 50 crore to RUDSICO for various infra projects. HUDCO is committed to provide financial assistance in overall development of Rajasthan in association with Govt. of Rajasthan for the ensuing financial year i.e. 2022-23.

बकाया भुगतान नहीं होने पर बिल्डरों ने बंद किया काम

200 करोड़ के कर्ज से 23 हजार परिवारों को मिलेगा आशियाना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. प्रदेश में जरूरतमंद को निर्धारित समय पर सस्ते आशियाने देने में सरकार नाकाम साबित हो रही है। प्रदेश के 23 शहरों में 28 आवासीय प्रोजेक्ट निर्माणाधीन हैं, जिनमें फिलहाल 23 हजार से ज्यादा आवास (ईडब्ल्यूएस व एलआइजी) दिए जाने हैं। इनमें से करीब-करीब सभी प्रोजेक्ट में काम देरी से चल रहा है। कई प्रोजेक्ट में तो हालात ये हैं कि 5 से 10 साल से काम अटका हुआ है।

सरकार का तर्क है कि ज्यादातर मामलों में कोविड के कारण आवंटियों ने तय राशि जमा नहीं कराई। इससे बिल्डर-डवलपर्स को भी भुगतान नहीं किया जा सका है। साइड इफेक्ट यह रहा कि कई बिल्डरों ने काम रोक दिया या फिर गति धीमी कर दी। इसके बाद ही राजस्थान अरबन ड्रिंकिंग वाटर सीवरेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉरपोरेशन (रूडसिको) 200 करोड़ का लोन ले रहा है, जिससे अधूरे मकान का निर्माण पूरा कराया जा सके। हालांकि, इसके अलावा कई मामलों में अनुबंधित बिल्डर भी तय समय में काम नहीं कर पा रहे हैं।

200 करोड़ का लेखा-जोखा: रूडसिको ने 200 करोड़ का लोन हाउसिंग एंड अरबन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हुडको) से लिया। हुडको ने 200 करोड़ में से 70 करोड़ की स्वीकृति जारी कर दी है। दो सौ करोड़ में से मुख्यमंत्री जन आवास योजना के प्रोजेक्ट पूरे करने में 160 करोड़ रुपए और अफोर्डेबल हाउसिंग पॉलिसी के प्रोजेक्ट पूरे करने में 40 करोड़ रुपए खर्च होंगे।

आवास निर्माण अटकने के कारण

- अफोर्डेबल हाउसिंग पॉलिसी के सात प्रोजेक्ट्स के 4112 मकानों का निर्माण अटका हुआ है।
- मुख्यमंत्री जन आवास योजना के 21 प्रोजेक्ट्स के 19 हजार 244 मकानों का काम रुका हुआ है।
- इन सभी प्रोजेक्ट्स में आवेदकों को मासिक किस्तों में भुगतान करना था, लेकिन 15 से 20 प्रतिशत आवेदक ऐसे हैं जिन्होंने या तो समय पर किस्त का भुगतान नहीं किया या किस्त देना बंद कर दिया।
- इसका असर यह हुआ कि प्रोजेक्ट के लिए राशि जुटाना मुश्किल हो गया। इसके चलते संबंधित बिल्डर ने निर्माण कार्य रोक दिया।

किस शहर में कितने आवास अटके

सिरोही	49[illegible]
नाथद्वारा	52[illegible]
फालना	50[illegible]
बालोतरा (फेज 1)	102[illegible]
बालोतरा (फेज 2)	48[illegible]
तनवारा (फेज 1) जोधपुर	56[illegible]
तनवारा (फेज 2) जोधपुर	83[illegible]
छोटी सादड़ी	28[illegible]
झालावाड़	144[illegible]
निम्बाहेड़ा	122[illegible]
चित्तौड़गढ़	43[illegible]
खेतड़ी	64[illegible]
राजसमंद	94[illegible]
किशनगढ़	41[illegible]
लोरडी पंडित, जोधपुर	83[illegible]
चोखा, जोधपुर	78[illegible]
केशोरायपाटन	71[illegible]
बूंदी	10[illegible]
पाली	10[illegible]
हिंडौनसिटी	6[illegible]
ब्यावर	8[illegible]
भिवाड़ी	3[illegible]
कुचामन सिटी	11[illegible]
अजमेर	4[illegible]
झुंझुनूं	13[illegible]
चूरू	2[illegible]
पिंडवाड़ा	5[illegible]

महिला कार्मिकों को किया सम्मानित

हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (हडको) क्षेत्रीय कार्यालय में महिला दिवस पर महिला कार्मिकों का सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि नगर निगम हेरिटेज की महापौर मुनेश गुर्जर थीं। इस अवसर पर गुर्जर ने भारत के विकास में महिलाओं के योगदान पर अपने विचार र...

हडको राजस्थान को 4760 करोड़ का ऋण देगी

जयपुर। हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हडको) ने विभिन्न परियोजनाओं के लिए राजस्थान सरकार को 4,760 करोड़ रुपए का ऋण मंजूर किया है। यह अब तक स्वीकृत सबसे बड़ी ऋण राशि है। हडको के क्षेत्रीय प्रमुख सुधीर कुमार भटनागर ने बताया कि स्वीकृत ऋण में से 4,000 करोड़ रुपए जल जीवन मिशन के लिए हैं। 600 करोड़ रुपए स्मार्ट सिटी और 160 करोड़ रुपए अमृत योजना की तीन योजनाओं के लिए मंजूर किए गए हैं। इसके अलावा विभिन्न नगर निगमों को 105 करोड़ रुपए तथा राजस्थान अर्बन ड्रिंकिंग वाटर सीवरेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन को 50 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत की गई है। उन्होंने कहा कि हडको राजस्थान के विकास में योगदान के लिए प्रतिबद्ध है। संस्था आवासीय एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास की विभिन्न योजनाओं के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रही है।

हडको से विकास के लिए 4760 करोड़ की राशि स्वीकृत

नवज्योति,जयपुर। हाउसिंग एण्ड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने राज्य के आवास एवं अधोसंरचना विकास की विभिन्न परियोजनाओं पर वर्ष 2021-22 में 4760 करोड़ की राशि मंजूर कर 4155.00 करोड़ रुपए की राशि अवमुक्त की। हडको के क्षेत्रीय प्रमुख सुधीर कुमार भटनागर ने बताया कि स्वीकृत योजनाओं में से 4,000 करोड़ जल जीवन मिशन के लिए, छह सौ करोड़ स्मार्ट सिटी और 160 करोड़ की तीन योजनाओं पर वित्तीय वर्ष 2021-22 में खर्च की। राज्य की महत्वकांक्षी जल जीवन मिशन योजना के लिए चार हजार करोड़ की राशि अवमुक्त की। इसके अलावा विभिन्न नगर निगमों को 105 करोड़ और राजस्थान अर्बन ड्रिंकिंग वाटर सीवरेज एण्ड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन लिमिटेड को 50 करोड़ की राशि की अवमुक्त की।

रूडसिको के लिए लेंगे 1837 करोड़ रुपए का कर्ज, सरकार बनेगी गारंटर

जयपुर। नगरीय विकास, आवासन एवं स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल की अध्यक्षता में बुधवार को रूडसिको बोर्ड की 52वीं बैठक हुई। बैठक में रूडसिको के वित्तीय वर्ष 2019-20 के वार्षिक लेखों का बोर्ड द्वारा अनुमोदन किया गया।

बैठक में निर्णय लिया गया कि आरयूडीएफ-II में 1637 करोड़ का ऋण बैंक ऑफ महाराष्ट्र से तथा अफोर्डेबल हाउसिंग के लिए 200 करोड़ का ऋण हडको अथवा बैंक से लिया जाए। राज्य सरकार द्वारा इसके लिए गारंटी दी जाएगी। बैंक ऑफ महाराष्ट्र से प्राप्त ऋण राशि 1637 करोड़ में से 1000 करोड़ सार्वजनिक निर्माण विभाग को शहरी निकायों की सड़कों के निर्माण के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग को दिया जाएगा। इसी प्रकार ऋण से प्राप्त शेष राशि 637 करोड़ से विभिन्न नगरीय निकायों में टाउन हॉल, एफएसटीपी एवं अन्य विकास कार्यों को पूर्ण किया जाएगा। परियोजनाओं को गति प्रदान करने हेतु रूडसिको द्वारा ऋण लिया जाकर कॉरपस फण्ड बनाया जायेगा, जिससे नगरीय निकायों को राशि उपलब्ध करायी जायेगी।

...का आखिरी वर्किंग डे कल

...आईपीएस व आईएफएस...

बजट घोषणा पूरी करने के लिए रूडसिको लेगा 1,637 करोड़ कर्ज

200 करोड़ रुपए अफोर्डेबल हाउसिंग प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए लेंगे, यूडीएच मंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक में फैसला

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. सरकार की बजट घोषणा पूरी करने को राजस्थान अरबन ड्रिंकिंग वाटर सीवरेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉरपोरेशन (रूडसिको) 1637 करोड़ और अफोर्डेबल आवास के लिए 200 करोड़ रुपए का लोन लेगा। राज्य सरकार इसके लिए गारंटी देगी। 1637 करोड़ में से एक हजार करोड़ रुपए पीडब्ल्यूडी को शहरी निकायों की सड़कों के निर्माण के लिए देंगे। बजट घोषणा 2021-22 के तहत निकाय क्षेत्रों में सड़क निर्माण किया जाना है। बाकी, 637 करोड़ से टाउन हॉल, एफएसटीपी एवं अन्य कार्य होंगे। नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल की अध्यक्षता में बुधवार रूडसिको के बोर्ड बैठक में यह फैसले किए गए। बैठक में प्रमुख सचिव नगरीय विकास कुंजीलाल मीना, स्वायत्त शासन सचिव भवानी सिंह देथा, डीएलबी निदेशक दीपक नंदी सहित आदि मौजूद रहे।

इनसे लेंगे लोन

- 1637 करोड़ रुपए का लोन बैंक ऑफ महाराष्ट्र से
- 200 करोड़ रुपए लेंगे हुडको से

यह होगा काम

- शहरों में सड़क निर्माण और केंद्र सरकार की अमृत योजना में निकायों की हिस्सेदारी की राशि देने के लिए।
- शहरों में सड़क सुधार व मरम्मत कार्य, पेयजल योजना के तहत पंपिंग स्टेशन का निर्माण, फीकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट्स की स्थापना, सीवर कार्य, सिटी पार्क का विकास और टाउन हॉल का निर्माण किया जाएगा।
- किस्तों की भरपाई निकायों को सरकार की ओर से दिए जाने वाले अनुदान में से की जाएगी।
- किस्त राशि कम पड़ने पर राज्य सरकार के बजट में से राशि दी जाएगी।

अफोर्डेबल हाउसिंग

हुडको से 200 करोड़ रुपए का लोन लेंगे। इस राशि से अफोर्डेबल हाउसिंग नीति के तहत अधूरी आवास योजनाओं को पूरा करेंगे। अफोर्डेबल हाउसिंग के प्रोजेक्ट में लाभार्थी द्वारा कोविड के कारण किस्तों का भुगतान समय पर नहीं किया जा रहा है। इन परियोजनाओं को गति देने के लिए रूडसिको लोन लेकर कॉरपस फंड बनाएगा।

बीवीजी पर नियमानुसार कार्रवाई करे ग्रेटर निगम

बीवीजी कंपनी का जयपुर हेरिटेज नगर निगम की ओर अनुबंध निरस्त करने के मामले में मंत्री शांति धारीवाल ने कहा है कि जयपुर ग्रेटर नगर निगम को मामले में नियमानुसार कार्रवाई करनी चाहिए।

राजीव गांधी स्कॉलरशिप फॉर एकडेमिक एक्सीलेंस- 2021

...विदेश में निःशुल्क शिक्षा...

Heritage gets ₹200cr loan from HUDCO

ESTIMATED COST OF VARIOUS PROJECTS

WORKS	AMOUNT
Construction of roads and drains	195 crore
Construction of footpaths	38.86 crore
Sewerage missing links	67.93 crore
Electrification work	37 crore
Development of parks	31.10 crore
Interest during construction period	18 crore
Total Cost	388 crore
Loan Amount Sanctioned	200 crore

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: *JMC-Heritage on Thursday received Rs 200-crore loan from HUDCO on Thursday.*

The civic body had applied for Rs 500-crore loan to meet with its requirements. HUDCO regional head Sudhir Bhatnagar came to JMC-Heritage headquarters and handed over the cheque to mayor Munesh Gurjar.

Gurjar said, "Our priority is to start the works related to gardens, sewerage lines and drainage system. For now, we have availed only Rs 200 crore as we want to utilise the funds in a systematic way. If we had taken the entire amount in one go, the interest would have been higher. We decided our priority on spending the amount."

There is a liability of over Rs 200 crore on Heritage including unpaid bills of contractors. The civic work contractors were on strike in both Heritage and Greater for more than six months. JMC, Heritage somehow cajoled the contractors by agreeing to pay a minimum Rs 25 lakh to each and resumed the civic work. The contractors, however, are still on strike in Greater.

Sudhir Bhatnagar, regional head, HUDCO, said the development proposal given by JMC, Heritage was as per National Green Tribunal's guidelines.

हडको

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित कम्पनी

(भारत सरकार का उपक्रम)

हडको भवन, विद्युत मार्ग, ज्योति नगर, जयपुर – 302005

दूरभाष: 0141–.2740863

टैलीफैक्स: 0141–2740702, ई–मेल **jro@hudco.org**

पंजीकृत कार्यालय

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित कम्पनी

(भारत सरकार का उपक्रम)

हडको भवन, भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110 003

दूरभाष: 24649610–23, 24627113–15, वेबसाईट **www.hudco.org**

फैक्स: 24625308